" जैनना आजना अंकनो वधारो "

[किताब-चर्चापत्र,-]

(जिसको.)

नश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न

महाराज-शांतिविजयजीने मुरत्तिबकिया;

मुकाम-पुना-मुल्कदखन,

समे दलिचंद-सुखराज,-जेसिंग-साकलचंद,-

और दक्षिणनिवासीके-लेखकाजवाब दर्जहै,

ब-खुबीदेखलो,-

[इसको]

शेठ-दोलतरामजी--खूबचंदजी--साकीन पांचोरा-

मुल्क-खानदेशने फायदेआम-जैनश्वेतांबर

संघके छपवाकर जाहिर किया,-

प्रथमआवृत्ति, २५००

दोहा,

समकीती जीवकोढीभलो-जाके देह-न-चांम,

विनाभक्ति भगवानके-कंचनदेह निकाम,-१,-

अहमदाबाद-सिटी-प्रिंटिंग प्रेसमें-शाह-

चंदुलाल छगनलालने छापा,-

संवत् १९७४— (मुफ्त,-)— सन, १९१७-

ग्रन्थ सं० ....
सदर बजार सिरोही

☞ [-दिबाचा,-]

किताब-चर्चापत्रबहुतअर्सेसे बनाइगइथी, मगर ब-सबब-कमफुरसतके छपवानेमें देरीहुइ, अबतोछपकर आपलोगोके सामने रखीगइहै,-इसकोपढलिजिये, चर्चाकेग्रंथपढनेसे आदमी होशियारहोजाताहै, और ग्रंथकर्त्ताकी दिइहुइदलिले एकसाथ पढनेका मौकामिलताहै, इसमेदलिचंद-सुखराजके पुछेहुवेसवालोके जवाबदर्ज है, जेसिंग-सांकलचंदके और दक्षिणनिवासीके लेखकाभी जवाब इसमेंमौजूदहै, आपलोगदेखिये ! बयानशुरुआतकिताब-दरबयान प्रतिदिनचर्या,-बीचबयान जिनमंदिरके दर्शन,-दरबयान बांसकादंडा,-और देसकालका सहारा,-बीचबयान पंन्यासपदवी और जातिस्मर्णज्ञान,-दरबयानरैलविहार,-बयानतीर्थकुल्पाकजी, औरउसका जीर्णोद्धार,-दरबयान, रत्नकंबल,-बयानपुस्तक छपवानेके बारेमें,-बीचबयान वचनसे शासनदेना,-बयान दीपकरखनेके बारेमें,-दरबयानस्थंडिलभूमि,-बीचबयान विद्यासागर न्यायरत्नपदवी,-दक्षिणनिवासीके लेखकाजवाब,-अखीरभाग चर्चापत्र,--और-निर्णयचर्चापत्र,-वगेरालेख काबिलदेखनेके है,-आपलोग व-गौरपढे, और सचबातका इम्तिहानकरे,-सच पानीमेंडुबता नही और आतीसमें जलता नही, दुनियामें सचहमेशां सबपर शिरोताज बना रहताहै,—

(ग्रंथकर्त्ता,-)

☞[चर्चापत्र,-]

(जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्ठा-विद्यासागर-न्यायरत्न-
महाराज-शांतिविजयजी तर्फसे.)

[इसमे दलिचंद-सुखराज,-जेसिंग सांकलचंद,-और दक्षिणनिवा-
सीके लेखका जवाबदर्ज है, बखूबीदेखलो, !-]

☞(कवित्त,-)

अरिहंतके जपेसे अष्टकर्मको विनाशहोत-सिद्धके जपेसेसब सिद्धपदपाइये,
आचारजकेजपेसे आतमविशुद्धहोत-उपाध्यायके जपेसेसदाउंचपदपाइये,
साधुकेजपेसे सर्वकामसिद्धहोत-अष्टसिद्ध नवनिधदायककहाइये,
कहतहैविनोदिलालमनवचनातिहुंकाल-परमेष्टिकेध्यानसे परमपदपाइये, १

☞(दोहा.)

ग्यारह अंग बारहउपांग-चौदहपूरव सार;
याहुमेते निकसो-महामंत्र नवकार,- १
जिनवानी जिने रुचकरी-पाइतत्वपरतीत,
जिने जिनवानी जानीनही-भटकेभवभयभीत, २
सुनकर वानी जैनकी-क्यौंनधरे मनधीर,
धर्म विनायह जीवकी-कौनहरे भवपीर, ३
माला फेरत हाथमें-जीभाहिलतमुखमांहि,
मनुवा फिरत बजारमें-येभी समरन नांहि. ४

☞(बयान शुरुआत किताब.)

१–इसकिताबमें अवल दलिचंद–सुखराजकेलेखका जवावादिया–गयाहै, बादऊसके जेसिंग–सांकलचंदके लेखका–और–अखिरमें दक्षिणनिवासीके–लेखकाजवाब बतलायागयाहै, इसको एकदफे अवल-सेअखीरतक पढलिजिये और सचबातका इम्तिहान किजिये, अगर आपको जैनअखबार पढनेकाशौखहै–तो तारिख (१३) जुलाइ सन (१९१५) के जैनअखबारमें–मेने–जो–दलिचंद सुखराज खिवेसरा–साकीन धुलिया–जिलेखानदेशके (२३) सवालोके जवाबदियेथे. आपलोगोने पढेहोगे,–दलिचंदसुखराज खिवेसराने ऊनसवालोपर फिर कुछलेख लिखाहै, उसका जवाब इसकिताबमें देताहुं. सुनिये !

२–आगे दलिचंद सुखराज अपने लेखकीशुरुआतमें लिखतेहैकि-शांतिविजयजी संवेगी मुनि कहलाकर मुनिधर्मके विरुद्ध बरतावदेखकर मेने (२३) प्रश्नपुछेथे,–

(जवाब.) पुछेथे–तो–ऊनका जवाबभी ऊसीवख्त–जैन–और-जैनशासन अखबारमें देदियाथा,–आपलोगोने पढाहोगा, शांतिविज-यजीके पास माकुल जवाबोंकी कमी–नही, जिसमहाशयको मेरा बरताव मुनिधर्मसे विरुद्ध दिखाइदेवे,–वो–मेरेपास–न–आवे, और मुजको मुनितरीके–न–माने, में–किसीको कहनेनहीजाताकि–आपलोग मुजको मुनितरीके मानो, जिसशख्शमें अगर श्रद्धा–ज्ञान–और चा-रित्र मौजूदहै, और ऊसको किसीने मुनितरीके नही माने–तो–क्या-हुवा ? और अगर ऊसमें श्रद्धाज्ञान–चारित्रगुण नही है, और ऊस-को–किसीने मुनितरीके माने–तो–क्याहुवा ? शांतिविजयजी हिंदु-स्थानके तमाममुल्कोमें सफरकरचुके है. गांवगांव–और–शहरशहरमें

जहां श्रावकोंकी आबादी है,-ऊनको मुनितरीके माननेवाले श्रावक-बहुत है.

अगर मेरा बरताव मुनिधर्मसें विरुद्धदिखाइदेताथा,-तो-तुम-खुद-शहरधुलियेमे जब-मेने-संवत् (१९७१) की सालका चौमासा किया-मेरी व्याख्यानसभामें धर्मशास्त्रसुननेको क्यौंआतेथे ? क्या ! ऊसवख्त-में-रेलमें नहीबेठताथा ? जब-मेराआना शहरधुलियेके टेशनपरहुवाथा,-धुलियेके श्रावकश्राविका-मयबेंड-बाजावगेरा जुलुसके पेशवाइकों मेरेसामने आयेथे. खयालकरनेकी जगहहैकि-अगर धुलियेके श्रावक मुजको-मुनितरीके-नहीमानतेहोते-तो-ऐसा क्यौं-करते ? और बडीआर्जु-मिन्नतकरके मेरेकों चौमासा क्यौं ठहराते ?

३—फिर दलिचंद सुखराज अपनेलेखमें बयानकरते हैकि-उत्त-रदाताने सत्यसे सो कोसदुररहकर उडाउ जवाब दिये है, प्रश्न एक-ढंगसे कियेगये है, उत्तर दुसरे ढंगसे दिये है.—

(जवाब.) कौन कहसकताहै उत्तर दुसरेढंगसेदिये है. जिसढं-गसे सवालकियेथे उसीढंगसे जवाबदिये है. मेरेदियेहुवे जवाब इन्सा-फसे-सोकोश दुरनही, बल्कि ! बहुत नजदीकहै, बजरीये जैन और जैनशासन अखरके हजारां शख्शोने बांचेहोगे,-कइमहाशयोके अभि-प्रायभी मेरेपास आयेहुवे मौजूदहै,

४—आगे दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है, उत्तरदाताने प्रश्न-कर्त्ताके आसयकों छिपानेका भरपेट प्रयत्न कियाहै, उसकी समालो-चना करना मुजे जरुरी मालुमहुवा,

(जवाब.) चाहे जितनी समालोचना करतेरहो,-में-उसपर प्रतिसमालोचना करनेलिये मुस्तेजहुं, सवालकर्त्ताके आशयकों-वो-छिपावे जिसकेपास माकुलजवाब-न-हो, जिसकीमरजीहो-ब-मरी-

येलेखके सामनेआवे, मेरीलेखनी जवाबदेनेकों तयारहै, सवालकर्त्ताके सवाल कौनसे अवधिज्ञानीकेथे, जो जवाबदेनेमें सोचनापडे,

५—फिर दलिचंद सुखराज इसमजमूनकों पेंशकरतेहै, मुताजी प्रथवीराजजी—रतनलालजीने शांतिविजयजीकी तुलना तीर्थंकरोसे करनाचाही, परंतु प्रमाणशुन्य ऐसालिखनेसे शांतिविजयजीका बरताव संवेगीधर्मानुसार नहीहोसकता,

(जवाब.) जैसे दुसरेसंवेगीमुनिने पंचमहाव्रत लिये है, शांतिविजयजीनेभी लिये है, जैसे दुसरेसंवेगीमुनिकों घरहाट—हवेली—खेंतीवाडी नही, वैसे शांतिविजयजीकोंभी नही, जैसे दुसरेसंवेगीमुनि—गौचरीजाते है, शांतिविजयजीभी जाते है, जैसे दुसरेसंवेगीमुनि—व्याख्यानधर्मशास्त्रका बांचते है, शांतिविजयजीभी बांचते है, जैसेदुसरेसंवेगीमुनि—पीलेकपडे पहनते है,—शांतिविजयजीभी पहनते है, फिर किसप्रमाणसे कोइकहसकतेहै ? उनका बरताव संवेगीधर्मानुसार नही, शांतिविजयजीका बरताव संवेगीधर्मासारहै—जभी—तो—हिंदके गांवगांवमें जहां श्रावकलोग आबादहै,—उनकों—मुनितरीकेमानते है, रैलमें बैठकर एकगांवसे दुसरेगांव सफरकरते है,—तोभी—श्रावकलोग मयबेंड—बाजावगेराजुलुसके पेशवाइकरते है,—उनका—व्याख्यान सुनते है, चौमासा ठहरानेकेलिये विज्ञप्तिकरते है, रैलकिराया वगेरा खर्चदेकर आदमी शाथ भेजते है, एकगांवसे दुसरेगांवतक पहुचानेजाते है, वंदनाकरते है, और भक्तिकरते है, इससे ज्यादा और क्या होगा ? यूंतो—तीर्थंकरोकोंभी—कइलोग—तीर्थंकरतरीके नही मानतेथे,—ऐसा आपलोग जैनशास्त्रोमें सुनतेहो,—इसीतरह—शांतिविजयजीको कोइश्रावक—जैनमुनितरीके—न—माने—तो—क्याहुवा ?—धर्मश्रद्धाजोराजोरी नही होसकती, श्रीयुत—प्रथवीराजजी रतनलालजी मुताका लिखना कोइप्रमाणशून्य नही, बल्कि ! प्रमाणयुक्तहै,—

६—आगे दलिचंद सुखराज बयानकरते है, मुताजीसाहब प्रथ-वीराजजी रतनलालजी आपशांतिविजयजीके भक्तहोगें, मगर हमने आपकों इसबातका कबपुछाथा, जिससे जैनपत्रका देढकोलम व्यर्थ-कालाकिया.

(जवाब.) तुमने नहीपुछाथा—तो—क्याहुवा? सचबात लिखने-का सबकोहकहै, जैनपत्रका देढकोलम कालानहीकियाहै, बल्कि! स-चबातलिखकर उजला कियाहै, उजलेकों कालासमजना गलतहैं, श्री-युत प्रथवीराजजी रतनलालजी मुता—बेशक! शांतिविजयजीके भक्त-श्रावकहै, क्योंकि—वे—शांतिविजयजीकी धर्मतालीमसे मूर्त्तिपूजापर श्रद्धावालेबने है, जिसमहाशयने जिससे बोधपायाहो, उसकी—वे—ता-रीफकरे, इसमें कौनताज्जुबकीबातहै,—

७—फिर दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है,—में—यहबात पहले-जानताथाकि—मेरेप्रश्नोकेजवाब शांतिविजयजीको अपनीसहीसे देना मुश्किलहोजायगा क्योंकि—उनकेजवाबमे मेरेपास बहुतसा मखजनहै.—

(जवाब.) तुमारेपास जितना मखजनहै, उससेज्यादामखजन शांतिविजयजीकेपास मौजूदहै, मुजे किसीकेजवाबदेनेमे कोइमुश्किल-नही, चाहे जितने सवालकरतेरहो,—और—मेरेसे माकुलजवाबपातेरहो, जैनपत्रमें मेने कितने महाशयोके सवालोपर जवाबदिये है, देखलो! तुमारे सवालोकेजवाबदेनकेलिये अपनेहस्ताक्षरकी सहीसे सामने आ-गयाहुं, श्रीयुत—प्रथवीराजजी रतनलालजीअपने गुरुकी वकालतकरे, इसमें कौनताज्जुबकी बातहै? जिनको—जिसका उपकारहो,—उनकी—वे—वकालत करेहीकरे, मेरेदियेहुवे जवाबोमें कोइक्या! पोल निका-लेगा?—वे—इसकदरमजबूतहै, जिसमें शूचिप्रवेशहोनाभी मुश्किलहै, और अगर मेरेदियेहुवे जवाबोंको पढकर किसीका शकबढ जायतो

बढजाआ, इसमें कोइक्याकरे ? तीर्थंकरदेवोंकी धर्मतालीमसेभी किसीकिसीका शकबढजाताथा, बतलाओ ! इसमें क्या ! तीर्थंकराका दोष समजना ? हर्गिज नही !! बल्कि ! समजनेवालोकी समजका फर्कथा,-में-उमेदकरताहुं मेरेजवाबोंकोंपढकर कइमहाशयोका-शकरफा होजायगा, और-जो-मेरेसेरुबरु नहीमिले है,-वें-मेरेलेखकों पढकर वाकिफहोजायगेंकि-शांतिविजयजीका बरताव इसतरहकाहै,-

(बयान-प्रतिदिनचर्या.)

८—आगे दलिचंद सुखराज इसमजमूनकों पेशकरते है, शहरधुलियेमें शांतिविजयजीका ठहरना दशमहिनेहुवा, जिसमें सवेरेसें बारांबजेतककी शांतिविजयजीकी दिनचर्या सुनलिजिये ! साढेसात तथा आठबजे शय्यासे उठना, सुगंधीतेल लगाना, चाहदुध पीना, गपशप लगाना, तबतक भोजनकावख्त होजाताथा, इतनेमें बारांबजेतकका टाइम बीतजाताथा.

(जवाब.) खूबकहा ! इतनालिखना औरभी भूलगयेकि-शांतिविजयजी व्याख्यानभी नहीबांचतेथे, फरमानतुमारे अगर-में-आठबजे शय्यासे उठताथा,-तो-बतलाइये ! व्याख्यान कबबांचताथा ? संवत् (१९७१) का चौमासा जबमेंने शहरधुलियेमें किया, उसवख्त तुमभी मेरीव्याख्यानसभामें आतेथे. साढेआठबजे-तो-मेरे व्याख्यानका टाइमथा, मेरीप्रतिदिनचर्या तुमने क्यालिखी, जिसने मेरीप्रतिदिनचर्या-न-सुनीहो सुनलेवे, चारघडी पीछलीरातसे-में-उठताहुं,-अपराजिता महाविद्या-जो-महानिशीथसूत्रके मूलपाठमे लिखी है, पढताहुं, बादउसके प्रतिक्रमणकरताहुं, फिर प्रतिलेखनाकरके स्थंडिलभूमि जाताहुं, दोघडीदिनचढेपर अगर अपनाचंद्रस्वर चलताहो-तो-

चाहदुध पीताहुं, नहीतो ! वोभी पडारहताहै, क्यौंकि-में-हरवख्त खानपान और विहारमें स्वरोदयज्ञानसे बरतावरखताहुं, साढेआठबजेसे साढेनवबजेतक व्याख्यानधर्मशास्त्रका बांचताहुं, दशबजेतक ज्ञानचर्चा-खतमहोनेपर थोडा विश्रामलेकर ग्यारहबजे गौचरीकों जाताहुं, और बारांबजेतकआहारपानीसे फारकहोताहुं, नवीनग्रंथबनाना, आयेगयेहुवे शख्शोसे धर्मकेबारेमें बहेसकरना, प्रतिलेखना करना, और शामकों आहारकरना, बादप्रतिक्रमण-ज्ञानचर्चा-और-योगाभ्यास चिंतवनवगेरा कार्योंसेंनिवर्तनहोकर शयनकरताहुं, इसतरह संक्षिप्तदिनचर्या-मेरी है,-मुजेधर्मकामसे फुरसतही नहीमिलती,-तो-गपशप क्याकरुंगा, ? मेरेसहवासमें आनेवाले खुदजानतेहोगे, चाहेजितना कोइमेरेबारेमे लेखलिखे, इनबातोसें-में-कुछ परवाह नहीकरता,-

(दर बयान जिनमंदिरके दर्शन,)

९—फिरसवालकर्त्ताने जिनमंदिरके दर्शनकेबारेमे पुछाहै, इसके जवाबमें-मालुमहो-रोगादिकारणहो,-बारीश होतीहो,-बडेबडे शहरोमें जहां जिनमंदिर दुरहो,-तो-अपनेपास स्थापनाजीमें-जो-सिद्धचक्रजीकायंत्र-या-चौविसीजीकी तस्वीरहोती है,-उसकेदर्शनकरलेवे, अैसाहुकमहै. जिनप्रतिमा-चाहे-छोटीहो,-या-बडी-एकसमान पूजनीक कही.

१०—आगे दलिचंद सुखराज लिखते है, जिनप्रतिमा छोटीबडी समानहै-तो-फिर शत्रुंजय गिरनार आदितीर्थोंकी यात्राजानेकी क्या गरज ! यदि जानेकी आवश्यकताहै,-तबतो-शहरमें-जो-प्रतिष्ठितमंदिरहोते है,-वेभी-एकप्रकारके तीर्थमानेगये है,

(जवाब.) हरेकशहरके मंदिरतीर्थ नहीमानेगये है, सवालकर्त्ता जैनशास्त्रोमे तलाशकरे, जैनशास्त्रोंमे तीर्थ-वे-मानेगये है, जहां तीर्थक-

होके कल्याणिकहुवेहो, जहां जैनमुनियोंकी मुक्तिहुइहो,-या-कोइ अतिशययुक्तक्षेत्रहो, शांतिविजयजीकी दलिल कमजोरनही है,-जो-दुटजाय, शत्रुंजयगिरनारवगेरा तीर्थ-मुताबिक जैनशास्त्रके जैनतीर्थ माने गये है, इसलिये उनतीर्थोंकी जियारतजाना जैनोकाफर्ज है, शांतिविजयजीने मजकुरतीर्थोंकी जियारतकिइहै, उनकी बनाइहुइ किताबजैनतीर्थगाइड देखो ! उनोने कितनेजैनतीर्थोंकी-जियारत किइहै, ?

(बीचबयान बासकादंडा-और देशकालका सहारा.-)

११—फिर दलिचंद सुखराज बयान करते है, जैनशास्त्रोमें-तो-बांसकादंडा रखनाकहा, मगरआजकल देशकालानुसार शिशमका-या-सागुनका-दंडा रखाजाताहै, जबशास्त्रोमें बांसका दंडारखना आपमंजुरकरते है,-तो-फिरदेशकालका बहाना लेकर आपके शांतिविजयजी बांसकादंडा क्यौंनही रखते ?

(जवाब.) यही-तो-शांतिविजयजीकी तर्क हैकि-जैनशास्त्रोमें जैनमुनिको-बांसकादंडा रखनाकहा, फिरआजकल जैनसंवेगीमुनि-शिशमका-या-सागुनकादंडा क्यौंरखते है,? दलिचंद सुखराज इसबातकी तलाशकरे. शांतिविजयजीकी दलिल उंचीडिग्रीकी है.

आगे दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है,-आप देशकालका सहारालेकर चरितानुवादपर जाते है,

(जवाब.) देशकालका सहारा कौनलेते है ? और चरितानुवादपर कौनजाते है, इसबातकी फिर तलाशकिजिये,-मै-चरितानुवादपर नहीजाताहुं,-बल्कि साफकहताहुं,-विधिवादपर चलो, क्यौंकि-विधिवाद खास तीर्थंकरोका फरमानहै, उसीपर सबजैनोंकों पाबंदरहनाचाहिये, विधिवाद सर्वव्यापी है, औरचरितानुवाद अल्पव्यापी है,-

विधिवादमें लिखाहै,–जैनमुनिको उद्यान–बनखंड–या–पहाडोकी गुफामेरहना, विधिवादमें लिखाहै, विहारमेंभी जैनमुनिकों नोकरचाकर–या–श्रावकवगेराकी सहायता नहीलेना, असाहयक होकर पवनकीतरह अप्रतिबद्धविहारीहोना, विधिवादमें लिखाहै, जैनमुनि नवकल्पीविहार करे, विद्यापढनेकेलियेभी एकशहरमें–या–गांवमें ज्यादे अर्सेतक–न–रहे, विधिवादमें लिखाहै–जैनमुनि दिवसके तीसरेप्रहरमें गौचरी जावे, विधिवादमें लिखा है जैनमुनि दिवसमें–एकही दफे खाना खावे, और आहार लेने जावे जब बेतालिस तरेहके दोषरहित भिक्षा लेवे, विधिवादमें लिखा है किसीके लडकेकों विनाहुकम उसके वारीशोके दीक्षा–न–देवे, विधिवादमें लिखा है–जैनमुनि–योगवहन करते वख्त अकेले उपवास, एकासने–या–आचाम्ल कर लिये और योगवहन होगया, ऐसा–न–समजे, बल्कि! जिस शास्त्रका योगवहन करना शुरु किया हो,–उस शास्त्रका मूल पाठ और अर्थ कंठाग्र करे.

अगर कहा जाये. पहले जैसी पुन्यवानी नही रही, पहले जैसा बलपराक्रम नही रहा, वीतराग संयम नही रहा, सातमे गुणस्थानसे उपरके गुणस्थान नही रहे, इस लिये देशकालका सहारा लेना पडता है, और द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखकर वर्तना पडता है, तो–फिर सोचो! इरादे धर्मके द्रव्य क्षेत्र काल भावकी सडकपर आना पडा–या–नही? पंच महाव्रत धारी–उत्कृष्ट संयमी बनना सहेज नही है, उसपर अमल करना चाहिये,

१३–फिर दलिचंद सुखराज इस मजमूनको पेश करते है, प्रवचनसारोद्धार शास्त्रमें–जो–चमडेके सपाट पहननेके सबब बतलाये है,–उनमेसे किस सबबसे–शांतिविजयजी चमडेके सपाट पहनते है?

(जवाब) तारिख (१३) जुलाइ–सन १९१५ के–जैनपत्रमें प्रव-

चनसारोद्धारका पाठ-और-उसका अर्थ-छपवा दिया है,-आप लोगोने देखा होगा. अगर शक हो-तो-प्रवचनसारोद्धार शास्त्र देखकर अपना शक-रफा करो, शांतिविजयजी उनही सबबोसे चमडेके सपाट पहनते है, जिस जैनमुनिके पांवके तलवोमें दर्द हो, पांवके तलवे फट जाते हो,-उस हालतमें चमडेके सपाट पहनना हुकम है,-पांवके तलवोंमें दर्द होना-या-फटजाना,-यहबात अटवीकेही ताल्लुक नही, चाहे अटवीहो-या-शहरहो-उपरबतलायेहुवे-सबबोसे जैनमुनि चमडेकेसपाट पहनसकते है, शांतिविजयजीकी दिइहुइदलिल इसकदर मजबूत हैकि-किसीहालतमें टुटनहीसकती, प्रवचनसारोद्धारशास्त्रकों सवालकर्त्ता मानते है-या-नही ? अगरमानते है-तोइसबातकों मंजुरकरे, अगर नहीमानते है-तो-बदलेका पाठदेकर मजकुरदलिलको तोडे, प्रवचनसारोद्धारशास्त्रकों माननेमें सवालकर्त्ता-इनकार-नहीकरसकते, क्यौंकि-उनोने अपनेहीलेखमें जैनमुनिकों अप्रशस्तभाषा-नहीबोलनेके बारेमें उक्तशास्त्रका पाठदियाहै,—

१४-आगे दलिचंद सुखराज बयानकरते है,-प्रवचनसारोद्धारकी बातकों शांतिविजयजी अपने मतलबकेलिये मंजुररखते है, मगर शांतिविजयजीकोतों तीर्थंकरोंके वचनोशिवाय जैनाचार्योंके वचनोंपर पुरा विश्वासभी-नही,—

(जवाब.) बेशक! मुजेऐसे जैनाचार्योंके-वचनोंपर पुराविस्वासनही-जो खिलाफहुकम तीर्थंकरोंके बयानफरमागयेहो, और यह बातठीकभी हैकि-जैनमें तीर्थंकरदेवोसें ज्ञानमें कोइबडानही,-इसबातको कौनजैन गलतकहसकेगा ?-में-अपनेमतलबकों नहीलेताहुं,-तीर्थंकरोंके वचनोकों लेताहुं, प्रवचनसारोद्धारकेवचनपर सवालकर्त्ताको शकहो-तो-दुसरेजैनशास्त्रकापाठ देकर-उसकों-रदकरे. में-उसपर जबावदुंगा,—

(बयान पंन्यासपदवीऔरजातिस्मर्णज्ञान,-)

१५-फिरदलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है,-मुनि-सौभाग्यविजयजीके जवाबमें शांतिविजयजी लिखते है, श्रीमान् रत्नशेखरसूरिजी कुछ केवलज्ञानी नहीथे, छद्मस्थथे, चारज्ञानके धारकभी भूलते चलेआये,—

(जवाब.) बेशक! मेंतो अबभी कहताहुं, श्रीमान् रत्नशेखरसूरिजी केवलज्ञानीनहीथे, और चारज्ञानके धारकपुरुषभी भूलतेचले आये, पंन्यासपदवीके बारेमें हकीकतसुनिये! किसी जैनागममें पंन्यासपदवी नहीलिखी, अगरलिखीहो,-तो-कोइ-पाठबतलावे, आजतक किसीने पाठनहीबतलाया, कोइकहते है, आचार्यपदमें गिनलो, कोइ कहते है, पंडितपदमें दाखिलकरलो, मगर विनाशास्त्रसबुतके कोइजैन इसबातको मंजुरनही करसकते,

१६-आगे दलिचंद सुखराज इसदलिलको पेशकरते है, प्रवचनसारोद्धारकेकर्त्ता-नेमिचंद्रसूरिजी कौनसे तीर्थंकर-गणधरथे, जिनके वचनोपर चमडेकेसपाटपहननेका सहारालियागया,

(जवाब.) अगर प्रवचनसारोद्धारके कर्त्ताके वचनप्रमाणीक नहीथे-तो-तुमने खुदअपनेलेखमें-जैनमुनिको अप्रशस्तभाषा नहीबोलनेके संबंधकापाठ क्यों मंजुररखा? परउपदेशमें कुशलबनना, इससेअपनेलेखपर खयालकरनाठीकहै, इन्साफकहताहै जिसजिस जैनाचार्यके बनायेहुवे ग्रंथमें-जोजोवचन मुताबिक विधिवादकेहो,-उनको-मानना चाहिये,-जोजो खिलाफहो,-उनको नहीमाननाचाहिये, यह सिधीसडकहै,-चाहे प्रवचनसारोद्धारके कर्त्ता-नेमिचंद्रसूरिजीहो-या-कोइ दुसरे जैनाचार्यहो,-तीर्थंकरगणधरोसे ज्ञानमें कोइबडानही,

१७-फिर दलिचंद सुखराज इसमजमूनको पेशकरते है,-शांतिविजयजीने-जातिस्मर्णज्ञानकी चर्चामे लिखाहै,-नदृश्या भाविनो देवा-नचजातिस्मृति र्नृणां,-इसदीपमालाकल्पके आधे श्लोकसे अपनामतलब लेनाचाहाथा,-यह कौनसे तीर्थंकर गणधरोके वचनहै, ?

(जवाब.) दीपमालाकल्पका यहफरमान मुताबिक विधिवादके है, इसलिये प्रमाणीक मानागयाहै,-विधिवाद तीर्थंकर-गणधरोका कहाहुवाहोताहै, मेनेजो जातिस्मर्णज्ञानके बारेमे दीपमालाकल्पके आधेश्लोकसेअपना मतलबलेनाचाहाथा,-इसमे कौन बेमुनासिबबातथी ? तीर्थंकरदेवोने एक-त्रिपदीसेही द्वादशांगवानीका मतलब लियाहै, सचीमिशाल एकभी बहुतकाम देती है. नकली मिशाले हजारों-हो-तोभी-क्याकामकी, ?

दीपमालाकल्पमें-जो-कलंकीराजाका होना तीर्थंकरमहावीरस्वामीके निर्वाणबाद (१९१४) वर्समेंलिखाहै, यह बयान सूत्रमहानिशीथके पाठसे विरुद्धहै, और महानिशिथसूत्र खास विधिवादहै,-जो-बात खिलाफविधिवादके हो-वो-नहीमाननाचाहिये,-महानिशिथसूत्र देखिये, उसमें क्यालिखाहै,-उसमें साफलिखाहै, कलंकीराजा-श्रीप्रभअणगारकी हयातीमेंहोगा, युगप्रधानयंत्र देखाजायतो-उसमे-श्रीप्रभअणगारको आठमें उदयके पहले युगप्रधानलिखे है,-जिसको शकहो महानिशिथसूत्र और-युगप्रधानयंत्र देखे, पांचमें आरेमें धर्मका तेइसदफे उदय-और तेइस दफेअस्तहोगा, जमानेहालमें तीसराउदय चलताहै, कलंकीराजाका होना जो श्रीप्रभअणगारकेवख्तमें महानिशीथसूत्रमेंलिखाहै-वो-आठमेंउदयमें होगा,-

१८-फिर दलिचंद सुखराज लिखते है,-जो-बात अपनेमतलबकी होती है वो-मानलिइजाय,-और-जो-आपके विचारसे विरुध्धहो,-

उसकेलिये आपआगे यह कहदेते है,-यह वचन कौनसे आगमोंके है,

(जवाब.) मैं-तो-अबभी यही कहता हुं,-आगमवचनसे खिलाफबात-न-मानो,-जैनमजहबमें तीर्थंकर-गणधरोसे ज्ञानमें कोइबडा नही,-इसीलिए-में-बातबातमें फौरन ! कहदताहुं-यह-वचन कौनसे जैनागमके है,-

१९-आगे दलिचंद सुखराज बयानकरते है,-शांतिविजयजी चमडेकेसपाट पहनतेहै, मगर देशकालानुसार आज कोइभी संवेगी साधु नही पहनते, क्योंकि-शास्त्रविरुद्धहै,

(जवाब.) चमडेके सपाट जैनमुनिकों अमुक-अमुक कारणोसे पहनना-शास्त्रविरुद्ध नही, बल्कि ! प्रवचनसारोध्धारशास्त्र साबीती देताहैकि-इनइनसबबोसें जैनमुनि चमडेके सपाट पहने, तारिख (१३) जुलाइ सन (१९१५) के-जैनअखबारमें पाठभी-मेने जाहिरकरदिया है, दुसरे संवेजी-जैनमुनि-नही पहनते, इससे शांतिविजयजीकों क्या ? और इसलेखमें सवालकर्त्ताने देशकालकानुसारका सहारा क्यों लिया,? शास्त्रके पाठपर खयाल क्यों नही किया ?

२०-फिर दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है,-आप हरेकबातमें इरादा बीचमें लातेहो,-यह आपकी कमजोरी है,—

(जवाब.) जो लोग इरादेकी बातकों नही समजसकते, ऊनकी कमजोरी है, जैनशास्त्रोमें तीर्थंकर-गणधरोने-जोजो-बातें कहीहै, इरादेपरही कही है,-इरादा कहो-या-मनःपरिणाम कहो, बात एकही है,-जैनमुनिकों चौमासेमे विहारकरना नहीकहा, और बीमारीवगेरा-का-कारणहो,-तो-इरादेधर्मके करनाभी कहा, जैनमुनिकों हरीवनस्पतिका स्पर्शकरना नहीकहा, मगर किसीखाडेमें गिरपडेहो,-तो-इरादेधर्मके हरीवनास्पति-लतावेलडीको पकडकर उपरआजानाभी

कहा,-जैनमुनिकों सचितजलका स्पर्शकरनानही कहा, मगर मुल्कोंकी सफरकरतेवख्त-रास्तेमें अगर नदीआजाय-तो इरादेधर्मके उसमें पांवदेकर सामने कनारे चलेजानाकहा, कहिये! इरादेकी सडक कितनी मजबूतहै,-जिसपर बातबातमें आनापडताहै, और जिसबातपर खयालकरोगे, बीचमें इरादा जरुरआयगा,—

(दरबयान-रैल विहार.)

२१-आगे दलिचंद सुखराजने-रैल-और-मोटारके बारेमे जो कुछ मजमून पेशकियाहै,-उसका जवाबदेताहुं, सुनिये!-आजकल-ब-सबबरैलके कइश्रावक अपना वतनछोडकर हजारां कोशोपर जा बसे है, जहांकि-जैनधर्मका-निशानभी-नहीपाता, और-वहांकोइ गीतार्थजैनमुनि उनकोरास्ता धर्मकाबतलानेवाले नहींमीलतेउसहालतमेंकोइ गीतार्थजैनमुनि ब-जरीये रैलके वहांजावे,-और-उनश्रावककों तालीम धर्मकी देवे,-तो-फायदाधर्मकाहै, मुल्कगुजरात-काठियावाडमें जहां जैनोंकी आबादी-ज्यादाहै, वहां जैनमुनिकों पैदल विचरना मुश्किल नही, अहमदावादसें सुरत बडोदेतक-इधर महीकांठेसे पालणपुरतक विचरनाभी कुछ मुश्किलकी-बातनही, मगर तमामहिंदुस्थानमें जहां श्रावकोकी आबादीदुरपरहै,-विनासहायताके आनाजाना दुसवारहै,-अगरकहाजाय जहां श्रावकोकी आबादी-न-हो, या-कमहो, अैसी जगह द्रव्यक्षेत्रकाल भावदेखकर सहायता लेवे तोकोइहर्जनही, फिर द्रव्यक्षेत्रकालभावकी सडकपर चलिये,—

जैनमुनिकों मुल्कोंकी सफरकरतेवख्त-अगररास्तेमें नदीआजाय तो-नावमें बेठनाहुकमहै, नाव पानीमेंचलती है, रैल जमीनपरचलती है, जैसे नदीमें नावकेचलनेसें पानीकेजीवोकी हिंसाहोगी, मगरइरादे धर्मके भावहिंसानही, वैसे रैलमेंभी इरादेधर्मके जैनमुनिकों भावहिंसा

नही, अगरकोइ जैनमुनि–शौखसे–या–अपनेआरामकेलिये रैलसवारी करे–तो–बेशक ! पापहै, औरउसकी मुमानियतभी है, क्यौंकि–उसका इरादा धर्मपर नहीरहा, आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें लिखा हैकि–धर्मरुचिअणगार नावमेंबेठकर गंगानदीउतरे, जब इरादेधर्मके नावमें बेठना भावहिंसा नही–तो–रैलभी एकतरहकावाहनहै, और रैल किसी एकशख्शकेलिये नहीचलती, चाहे उसमेंकोइ बेठनेजावे–या–न–जावे, वो–अपनेटाइमपर आयाजायाकरती है, जहां संसारका कोइमतलब–न–हो, सिर्फ ! धर्मोपदेशदेनेका सबबहो, वहांइरादा धर्मकाहै,–इसीलिये इरादेधर्मके–मैं–रैलमें बेठकरमुल्कोकी सफरकरता हुं, और श्रावकोको तालीमधर्मकी देताहुं, मेरे उपदेशसे कइजगह–जैनश्वेतांबरमंदिरोका–तीर्थोंका–और धार्मिक–कार्योंका सुधाराहुवाहै, होताहै, और आगेको होनेका संभवहै,—

२२–फिर–मेने–जो–दलिचंदसुखराजके तेइससवालोके जवाबमे सूत्रआवश्यककापाठदेकर कहाथाकि–एकधर्मरुचिनामके जैनमुनि नावमेंबेठकर गंगानदीकेपारउतरे, वहठीककहाथा, इसपरसवालकर्त्ता लिखतेहै, उसपाठका अर्थकियाहै, वो–व्याकरण और धर्मशास्त्रसे विरुद्ध एवं असत्यकियाहै,—

(जवाब.) कौनकहसकताहै असत्यकियाहै, देखिये वो–पाठयहां फिर दिखलाताहुं, और उसका अर्थभी करादिखलाताहुं, सुनिये !

लोकेन बहुना सार्द्धं–नावा धर्मरुचिं मुनिं,
गंगामुत्तारयामास–नंदनामकनाविकः १,

इसपाठका माइना यहहुवाकि–एक धर्मरुचिनामके जैनमुनि–नावमेंबेठे और नंदनामके नाविकनेउनको गंगानदीकेपार उतारे, इसपा-

नका अर्थचाहे व्याकरणके कानुनसे करो, या-भावार्थसे करो, बात वहीआयगी-जो-उपर लिखीगइहै,

२३-आगे दलिचंद सुखराज इसमजमूनको पेशकरते है, धर्मरुचिमुनिस्वयं शांतिविजयजीकी तरह किरायादेकर गंगापार नही उतरेथे,

(जवाब.) मेने मेरेलेखमें ऐसाकहां लिखाहैकि-धर्मरुचिमुनि-किराया देकर गंगापार उतरे, अगर लिखाहै,-तो-कोइ बतलावे, शांतिविजयजी-सफरके वख्त जबजब नावमें-या-रैलमें बेठते है, किराया शाथमे रहनेवाले आदमी देते है, और गांवगांवके श्रावकलोग अपनीभक्तिसें-खर्चदेकर आदमी शाथभेजते है,

(बीचबयान तीर्थकुल्पाकजी और उसका जीर्णोद्धार.)

२४-फिर दलिचंद सुखराज बयानकरते है, जो तीर्थ कुल्पाकजीकेलिये लिखा गया है,-वो-बिल्कुल गलतबात है, कुल्पाकजीके जीर्णोद्धारके बारेमें वहांके श्रावकोका विचार शांतिविजयजीके जानेके पहलेसेही-होरहाथा, और प्रतिष्ठाभी बिकानेरनिवासी-ऊपाध्यायश्री रामलालजी गणीजीके हाथसे हुइथी,

(जवाब.) तीर्थ-कुल्पाकजीके मंदिरकी प्रतिष्ठा दुसरीदफे हुइ नही, जो पहलेकी है,-वही कायमहै,-अगर मेरेजानेसे पहलेही जीर्णोद्धारकरानेका विचार श्रावकोकाथा, तो-मेरेजानेसे पहले जीर्णोद्धारकाचंदाकरके कामशुरु क्यौंनहीकियाथा? तीर्थकुल्पाकजीके मंदिरका जीर्णोद्धार संवत् (१९६५) में-मेरे ऊपदेशसेहुवाहै, ऊससाल मेराचौमासा दखनहैदराबादमेंहुवाथा, मेने दखनहैदराबादके जैनश्वेतांबर श्रावकोकों व्याख्यानसभामें ऊपदेशदियाकि-आपलोग-मुल्कमारवाडसें यहां व्यापारकेलिये आए, दौलत पैदाकिइ और नजदीकके जैनतीर्थका

जीर्णोद्धार नहीहुवातो ठीकनही, उनोनेकहा आपकुल्पाकजी तीर्थमें पधारे, हमलोग शाथचलते है, उसवख्त श्रावकोकेशाथ दखनहैदराबादसे मेराजाना तीर्थकुल्पाकजीमें हुवा, जो-बेजवाडा-लाइनमे आलेरटेशनसे दो-कोशदुरहै, तीर्थकुल्पाकजीमें कुल्पाकनामका एकगांव आबादहै, मगरउसमें जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी बिल्कुलनही, तीर्थकुल्पाकजीका मंदिर देखागयातो निहायतपुराना और बेंमरम्मत पाया, मेने उसवख्त उसमंदिरके बाहारके दालानमे बेठकर दखनहैदराबाद-और-सिकंदराबादके श्रावकोंको उपदेशदिया, उसीवख्त मेरे रुबरु श्रावकोने जीर्णोद्धारके खर्चेका चंदाकिया, और जीर्णोद्धारका काम शुरुहुवा,-आज उसतीर्थकी निहायतरक्की हुइहै, संवत् (१९६६) में-शहरमद्रासका चौमासा पुराकरके जबदुसरीदफे मेराजाना तीर्थकुल्पाकजीमें हुवाथा, उसवख्त तीर्थकुल्पाकजीके मंदिरके शिखरपर धजादंड चढायागयाथा, प्रतिष्ठा नहीकिइगइथी, उसवख्त विकानेर निवासी-उपाध्यायश्रीरामलालजी गणीजीभी वहांआयेथे-और-मेरी औरउनकी वहां मुलाकातहुइथी, दरयाफत कियाजाय उसवख्त कुल्पाकजीके मंदिरका धजादंड चढायागयाथा-या-प्रतिष्ठा हुइथी, ?- देखिये ! इसतरह मुल्कदखनमें रैलविहारसे मेराजानाहुवा-तो पुराने जैनतीर्थोंका उद्धारहुवा,-या-नही ? इसीलिये-में-इरादे धर्मके-रैलविहार करताहुं.

(बयान-रत्नकंबल.)

२५-आगे दलिचंद-सुखराज तेहरीर करते है. पेस्तरके जैनमुनि लाखलाख रुपयोकेरत्नकंबल औढतेथे,-यहबात जुठहै,—

(जवाब.) आवश्यकसूत्रमें बयानहै,-एक-शिवभूतिनामके जैनमुनिने रथवीरपुरनगरके राजासे रत्नकंबल लियाथा, पेस्तरके जैन-

मुनि रत्नकंबल ओढतेथे, जभी जैनशास्त्रोमे उसका बयानदर्जे है, जैनमुनिको वस्त्रपात्रवगेरा उपधिमें ममत्वभाव नहीरखनाकहा, ममत्व भावरहित योग्य और किंमतीवस्त्र ओढेतो कुछहर्जेनही,

२६–फिर दलिचंद सुखराजइसदलिलकों पेंशकरते है, जैनशास्त्रोमें साधुको अचेलक लिखाहै, अचेलकका माइना कल्पसूत्रादिग्रंथोमें और टीकाओमें मानोपेत जीर्णप्रायवस्त्र रखनाकहा, औरआपतो पचरंगी रेशमी उनीरुमाल और दुशालेओढते है, फिरआपमें अचेलकत्वधर्म कैसेमानाजाय ?

(जवाब.) जैनशास्त्रोमें जैनमुनिकों श्वेतमानोपेत जीर्णप्रायवस्त्र रखनाकहा, फिर पीतवस्त्ररखनेवाले जैनमुनिमें आपलोग अचेलकत्व धर्म–मानतेहो–या–नही ? और जीर्णप्रायवस्त्रकी जगह नयेमलमल और जगन्नाथीके कपडेलेवे–तो उसजैनमुनिको आपलोग जीर्णप्रायवस्त्रधारी कहेंगे–या–कैसे ? जीर्णप्रायवस्त्रधारी जैनमुनिको–जीर्णवस्त्रही लेनाचाहिये, अगरकहाजाय–श्वेतमानोपेतवस्त्रकी एवजमें पीतवस्त्र–जो–धारणकियेगये है यह इरादे धर्मरक्षाकेकारणसे कियेगये है, तो फिर कारण और इरादेकी सडकपर चलिये, और खयाल किजिये, इरादेकी बात कितनी मजबूत ठहरी, जिसपर हरवख्त आनापडताहै,

२७–आगे दलिचंद सुखराज इसमजमूनकों पेंशकरते है, रंगबेरंगी दुशालेरखना, और दिनमें तीनदफे पुशाकबदलना, क्या ! इसको अचेलकत्वधर्म कहते है ? क्या ! कपडेबदलनेमें आत्माका साधनहै ?

(जवाब.) अगरकपडेबदलनेमें आत्माका साधननही है,–तो–बतलाइये ! जैनमुनि–शुभह–शामकों प्रतिलेखना करतेवख्त–दो–दफे कपडेक्यों बदलते है, ? शांतिविजयजी दिनमे तीनदफेपुशाक नहीबदलते, जैसेदुसरे जैनमुनि प्रतिलेखनाकेवख्त दोदफे बदलतेहै, उसी

तरह-शांतिविजयजीभी-दोदफे बदलतेहै, रंगबेरंगीदुशाले औररेशमी-रुमालरखनेका जवाबसुनिये! पीलेकपडे रखनाअह एकतरहका रंगहुवा, एकतरहकारंग मंजुरहुवा-तो-दुसरीतरहकारंग-रखनेसे चारित्रधर्म चलानहीजाता, जैनमुनिकों जरीकाकपडा-रखनामनाहै,-सो-शांतिविजयजी-जरीकेकपडे नहीरखते, फिरऊनको कोइक्याठपका देसकतेहै,?

२८-फिर दलिचंद सुखराज बयानकरतेहै, रुइकीगादी बीछाकरसोना-सुगंधीतेललगाना, गृहस्थसे आहारमंगाना, इनमें रोगादिकारणबतलाया,-तो-शांतिविजयजीके शरीरमें ऐसाकौनसा रोगहै ?

(जवाब.) रोगादिकारणहोना-शरीरकाधर्म है, तीर्थंकर महावीरस्वामीके शरीरमें केवलज्ञानकी हालतमेंभी रोगपैदाहुवाथा-तो-दुसरे जैनमुनिके शरीरमें रोगपैदाहोना कौनताज्जुकीबातहै ? शांतिविजयजीके मस्तकमें और नेत्रमेंरोगहै-जभीतो-चश्मे-लगातेहै, और सुगंधीतेल इस्तिमालकरतेहै,-रोगादिकारणसे जैनमुनिको-शतपाक-सहस्रपाक-और-लक्षपाकतेललगाना हुकमहै, रोगादिकारणसे जैनमुनिकों घास-बीछाकरसोनाहुकमहै, घासपरकंबल-और-कंबलपर-रुइकाकपडा बिछायाजाताहै, गृहस्थसे आहारमंगवाकरखानेका जवाबसुनिये ! कभी रोगादिकारणहोजायतो जैनमुनिकों गृहस्थसे आहारमंगवाकरखानेकाभी हुकमहै, इसमेंबातक्याथी,-?

२९-मैनेजो-सूत्रआवश्यकका पाठदेकर लिखाथाकि-एकजैनमुनिके शरीरमें रोगथा, उसहालतमें-एक-जीवानंदजीनामके वैद्यने उसजैनमुनिके शरीरपर लक्षपाकतेल मर्दनकियाथा, गोशीर्षचंदन लगायाथा, और रत्नकंबल ओढायाथा, इसपर दलिचंद सुखराज लिखते है-देखिये ! महाव्याधिहोनेपरभी-उसआत्मार्थी साधुने अपना उपाव शांतिविजयजीकी तरह बीचमें इरादा धर्मकालाकर नही किया,-और-न-किसीसे कहकर करवाया,

(जवाब.) अगर बीचमें इरादाधर्मका लाकर उसआत्मार्थीसाधुने इलाजनही करवायाथातो–जिसवख्त–जीवानंदजी वैद्यने उस जैनमुनिके रोगका इलाजकरना शुरुकिया उसवख्त मना क्यौं–नही किइ? और ऐसा क्यौंनहीकहाकि–हमारेरोगका इलाजकोइ मतकरो, हमअपने पूर्वकृतकर्मकों भोगतेरहेंगे, दरअसल इरादेधर्मकेही उसजैनमुनिने इलाजकरवायाथा, और–जीवानंदजी वैद्यने इरादेधर्मकेही इलाजकियाथा, इसबातकों कोइ गलतनही कहसकता,

आगे दलिचंद सुखराज तेहरीर करते है,–गौतमगणधरने अष्टापदपर्वतपर तापसोकों भोजनकरवायाहै,–वो–गौचरीलाकर करवायाहै, गणधर गौतमस्वामीने मौललेकर नहीकरवाया,—

(जवाब.) शांतिविजयजी कब कहते है, गौतमस्वामीने मौल लेकर तापसोंकों आहारकरवाया? अगर किसीजगह ऐसाकहाहो,–तो–साबीतकरे, या–मेरेलेखमें ऐसा कोइलेखबतलावे, गौतमस्वामीने अष्टापदपर्वतकेनीचे थोडीसी–क्षीरसें–जो–पनरांसो तापसोंको आहार करवाया, अक्षीणमहाणसनामकी लब्धिचलाइ–यह–इरादेधर्मके चलाइ–या–किससबबसे? अगर कहाजाय इरादेधर्मके चलाइथी–तो–खयालकिजिये–इरादेधर्मकी सडक कितनीमजबूतहै, जिसपर गौतमगणधर जैसे महापुरुषभी चलतेथे,—

३०–फिर दलिचंद सुखराज इसमजमूनकोंपेशकरतेहै, कल्पसूत्रमें **नवरसप्रधाना विकृतयोभी क्षणंवारंवारं आहारयितुं नकल्पते,**–ऐसापाठहै, इसकामतलब यहहैकि–बलवान् और निरोगीमुनिकों घृतदुग्धवगेरा पौष्टिकपदार्थोंका आहारनही करनाचाहिये,

(जवाब.) इसकेमाइनेमें वारंवारशब्दकों क्यौंछोडदिया? सवालकर्त्ता तलाशकरे इसपाठमें देखो! वारंवार घृतदुग्धवगेरा पौष्टिकपदार्थ

खानेकीमनाहै, मगरकभीकभी खानेकीमनानही, शांतिविजयजी घरके भेदी है,—कल्पसूत्रकापाठ हरसाल पर्यूषणोकेदिनोंमें बांचते है,—ऊनसे क्याछिपाहै ?

३१—आगे दलिचंद सुखराज लिखतेहै, देवपुरजीनके बगीचेमें खुर्शीबीछाकरबेठे—इसमें वनास्पतिकासंघटन—हुवा—या—नही ?

(जवाब.) देवपुरजीनके बगीचेमें खुर्शीवनास्पतिपर नहीबीछीथी, अलगबीछीथी, इसलियेसंघटन नहीहुवाथा,—यहजिक्र संवत् (१९७२) के—प्रथमवैशाखसुदी सप्तमीकेरोजकाहै, जबकि—में—शहर धुलियेसे रवानाहोकर सीरपुरकों जाताथा,—शहरधुलियेके श्रावक—श्राविका मयबेंडबाजावगेरा जुलुसके मुजकों देवपुरजीनके बगीचेतक पहुचानेकों आयेथे. वहां—मेने श्रावकोकोंधर्मोपदेश सुनायाथा,—ऊसवख्त—एकशख्शने खुर्शीलाकर मेरेपासरखीथी, और ऊसपरमेरा बेठनाहुवाथा, जैनमुनिकों खुर्शीपरबेठनेसें ऊनकाचारित्रधर्म नहीचलाजाता, जैसेपाट पाटले—और व्याख्यानकातख्त वगेरालकडेके बनेहुवेहोतेहै,—वैसे—खुर्शीभीलकडेकी बनीहुइहोतीहै,—

३२—ज्योतिषशास्त्र एक दीव्यज्ञानहै, और उर्दू जबानमें उसकों नजुम कहते है, तीर्थंकर-गणधरोंने-जैनागम-चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-वगेरामें नजुमका बयानफरमाया, महानिशीथसूत्रमें महाविद्याओ बतलाइ, नजुम और मंत्रशास्त्रका जानना अगर पापहोता, तो तीर्थंकरगणधर जैनशास्त्रोंमें उसकाबयान क्योंफरमाते ? जैनाचार्य भद्रबाहुस्वामीने उपसर्गहर—तथा—ग्रहशांतिस्तोत्र बनाये, जैनाचार्य—सिद्धसेन—दिवाकरजीने कल्याणमंदिर और मानतुंगसूरिजीने भक्तामरस्तोत्र—बनाये, और उसमें बीजमंत्र दर्जकिये है, फर्जकरो ! अगर मंत्रशास्त्रका जानना बेमुनासिब होताती—असा क्योंकरते ? इनके बनानेवाले जै-

नाचार्य पंचमहाव्रत धारीथे–या–कौन ? अगरकोइ जैनमुनि इरादे धर्मके किसीश्रावकको जैनस्तोत्रके आराधनकी विधि बतलावे तो कोइहर्जनही, शांतिविजयजी इसीतरह जैनस्तोत्रकी विधि योग्यश्रावकको बतलाते है, और–वे–योग्यश्रावक धर्मकाममें द्रव्य खर्चकरते है, शांतिविजयजीके शाथ–पंडित–या–लेखक–वगेरा–एकदो–आदमी हमेशां बनेरहते है,–अगर कोइ श्रावक शांतिविजयजीके शाथ चलनेवाले नोकरको रास्तेके खर्चकेलिये कुछद्रव्य देवे, तो उस श्रावकको पुन्यहोनेका सबबहै,–इसमे शांतिविजयजीको परिग्रह क्या लगा ?

ज्योतिषशास्त्रके बारेमें बयान सुनिये,–ज्योतिषशास्त्र सचाहै, मगर उसका जाननेवाला सचाहोनाचाहिये. अगर ज्योतिषशास्त्र सचा–न–होता–तो–ज्योतिषी लोग–जमीनपर बेठकर आस्मानके सितारोका–हाल और चंद्रसूर्यका ग्रहणहोना कैसे बतला सकते, ? ज्योतिषशास्त्रकी सचाइका यहीतो–नमुनाहै, कितनेक वर्सोसे–बजरीये नजुमके निकालाहुवा हरसालका बरतारा मेरी तर्फसे जैन अखबारमें छपताहै,–आपलोगोने पढाहोगा, तारिख–२३–जुलाइ–सन–१९१६ के जैनअखबारमें छपाथाकि–जैनधर्मका बरतारा सत्यहुवा, जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा–विद्यासागर–न्यायरत्न–महाराज शांतिविजयजीसाहेबने जैनपत्रमेंसाल (१९७३) का–हाल कैसाहोगा ? उसपर एकबरतारेका दियाहुवाबयान तारिख (११) जुन–सन (१९१६) के–अंकमें छपाहै, उसमें लिखाहै–वारीशका योग आषाढसुदी छठ–और–सातमके रौज होगा, उसरौज वारीश बहुत अछीहुइ, और एकमास हुवा वरसाद नहीथा, बीज और तरु–सुकने लगेथे, वारीशहोनेसे बहुतफायदा हुवा, आषाढसुदी पुनम–और–हिंदी श्रावणवदी एकम–गुजराती आषाढवदी एकमके रौज

वारीशहोगी, अैसा बरतारेमें लिखाथा, यहयोगभी सत्यहुवा, और वारीश बहुतहुइ,-देखिये-संवत् (१९७३) के-बरतारेके बारेमें-मजकुर बयान छपाथा, आमलोगोने पढाहोगा,

३३-आगे दलिचंद सुखराज बयानकरते है, करना-कराना कुछ नही, नाहक ! जैनप्रजाकों तेजीमंदीका आडंबरबतलाना कारआमद नहीं होसक्ता,-

(जवाब.) शांतिविजयजी किसीकों कहनेनहीजातेकि-आपलोग मुजे नजुमकेबारेमें पुछनेआओ,-हरसाल-ब-जरीयेनजुमकेमेरा-बरतारा जैनअखबारोमेंछपताहै, कभीदेरहोजाती है-तो-कइमहाशय बजरीयेचीठीके पुछतेहैकि-आपकीतर्फसे निकालाहुवा बरतारा इससाल अबतक क्यौंनहीछपा ? विनाइल्मपढे किसीका आडंबर नहीचलता, आडंबरभी जभीचलताहै, अगरऊसइल्मकों पढेहो,-

(बयान पुस्तक छपवानेके बारेमे.)

३४-फिर दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है, पुस्तकछपवानेके लिये कुछसारे पैसे नहीदिएजाते, कुछहिस्सा दियाजाताहै, और आपतो-कुछरकमलेलेतेहो, फिरवर्सौतक-वे-पुस्तके प्रगटहोतीनही,-

(जवाब.) कौनकहसक्तेहै, ? पुस्तकवर्सौतक प्रगट नहीहोती ? चाहेदेरसे प्रकटहो-या-जल्दीसेहो, मगर-जो-किताब मेरीबनाइहुइ छपनाशुरुहुइ-वो-छपतीजरुरहै,-चाहेकोइ ऊसकाइम्तिहानकरकेदेखे, पेस्तरके जैनमुनि-हस्तलिखितपुस्तकसे जैनसमुदायकों फायदा पहुचातेथे, जमानेहालमें छपेहुवेपुस्तकोसे कामलियाजाताहै,-द्रव्यका खर्च-तो-दोनोकामकेलिये होताहै,-पुस्तकबनाना-या-छपवाना-सहजबात नही, जो आजबनाइ-और-कलछपगइ, पुस्तकछपवानेकेलिये

रकम-श्रावकोसे अवललेनेके सबब-तीनहै,-पहले-तो-धर्मकाममें ढीलकरनाठीकनही, दुसरासबब यहहैकि-प्रेसवालोंको एडवान्सभेजना पडताहै, तीसरासबब-एक-ग्रंथबनानेकेलिये अनेकग्रंथमगवानेपडतेहै, और सबसाधनमिलानापडतेहै, इसीसबब सबरकम पेस्तरलिइजाती है, और-वो-रकमशाथमें रहनेवाले कार्यकर्त्ताकेपास रखीजातीहै, और ऊसकाहिसाब-पुस्तकछपनेकेबाद देखाजाताहै,-जैनोके धार्मिककाय-देकेलिये ग्रंथबनाकरछपवाना-या-जैनअखबारोमें धर्मकेबारेमें लेख लिखना, जैनमुनिका फर्ज है,-

३५-आगे दलिचंद सुखराज इसदलिलको पेंशकरते है-दखन-हैदराबादके श्रावकोंसे-संवत् (१९६५) में-रुपये (१००) लियेथे-वो-पुस्तकछपवाकर ऊनकोंनहीभेजीगइ,-वो-रकम कहां है ?

(जवाब.) जो-पुस्तक दखन-हैदराबादकेश्रावक संवत् (१९६५) की-सालमें छपवानाचाहतेथे,-और-ऊसकेलिये ऊनोने-जो-(१००) रुपयेदियेथे, वो-पुस्तक ऊतनेरुपयोंसें छपनहीसक्तीथी; इसलिये संवत् (१९६६) में-जब-मेराजाना दुसरीदफे तीर्थकुल्पाकजी और-दखन-हैदराबादतर्फहुवा-तब-वहांकेश्रावकोंको कहागयाकि-उतने-रुपयोंमें-जो-पुस्तक नहीछपसक्ती, ऊनोनेकहा, हमनेज्ञानपुस्तकके-निमित्त-सो-रुपयेदियेहै, दुसरेज्ञानपुस्तकके काममेंलगादेना, इसलिये-वो-रकमदुसरे-ज्ञानपुस्तकके काममेंलगादिइगइहै,—

(दरबयान वचनसे शासनदेना.)

३६-फिर दलिचंद सुखराज इसमजमूनको पेंशकरते है, सख्त जबान और अश्लीलजबानका जमीनआस्मानका अंतरहै,-और-प्रवचन सारोद्धार पृष्ठ (४३६) पर-मुनिको-छह-प्रकारकी अप्रशस्तभाषा बोलनेका मना-लिखाहै.-

(जवाब.) मना लिखाहै,-तो-किसअपेक्षासे लिखाहै? इसका खुलासा लिखिये! शास्त्रकारोने हरेकबातमें अपेक्षारखी है,-विनाअपेक्षाके कोइवचन नही, और उसीकों समजना चतराइका काम है, दरअसल! पांचइंद्रियोंकी विषयपुष्टीकेलिये जैनमुनिकों अप्रशस्त भाषा नही बोलनाचाहिये इरादेधर्मरक्षाके-या-शिष्यकों विनय सिखलानेकेलिये वचनसेशासन देना मनानही, देखो आवश्यकसूत्रमें क्या! लिखाहै? उसपर खयालकरो,—

(आवश्यकसूत्रके-अवलअध्ययनमें पाठहैकि,—)

जह जच्च वाहलाणं-अस्साणं जणवएसु जायाणं,
सयमेव खलिण गहणं-अहवावि बलाभिउगेण,
पुरिसज्झाएवि तहा-विणीय विणयंमि नथ्थिअभियोगो,
सेसंमि अभियोगो-जणवयजाए जहा आसे,

(टीका,) यथा जात्यबाल्हिकानामश्वानां जनपदेषु मगधेषु जातानां स्वयमेव खलिनस्य-कविकस्यग्रहणं अथवापि बलाभियोगेन तथा पुरुषजातेपि पुरुषविशेषेपि विनीतविनये अभ्यस्तवैनेयिके नास्ति अभियोगः-शेषेविनयरहिते बलाभियोगो वर्तते,—

माइनाइसपाठका यहहैकि-जैसेजातिवान् घोडा-अपनीलगामकों खुदलेलेताहै,-तो-उसकेलिये बलाभियोग करना कोइजरुरतनही-जो घोडाखुद लगामको नहींलेताहै, उसकोबलाभियोगकरके लगामपहनाइ जातीहै, इसीतरह विनयवानशिष्य अगरखुदसमजजाय-तो-ऊसकों वचनसे शासनदेना कोइजरुरतनही,-जो-शिष्य विनयरहितहो-वो-वचनसे शासनदेनेके काबिलहै, देखिये! आवश्यकसूत्रकापाठ-जोकि-खास! विधिवादकाहै, इसपर गौरकिजिये! शिष्यकों विनयसिखलाना और न्यायरुपी अंकुशमेंरखना गुरुकाफर्जहै,-इसीलिये वचनसे शासनदेना फरमाया,—

३७–आगे दलिचंद सुखराज लिखतेहै,–रायपसेणीसूत्रमें परदेशीराजाका–और–ज्ञातासूत्रमें धर्मरुचि–अणगारका–ऊदाहरणदेतेहो, मगर–वो–चरितानुवादहै,—

(जवाब.) जो–बात–मुताबिक विधिवादके है–वो–खास ! विधिवादहै,–उसको चरितानुवादकहना गलतहै, जैसे–तीर्थंकर–गणधरोंने जिसजिस बातकाहुकम फरमायाहो–और–मुताबिकउसके किसीने बरतावकियावो–खासविधिवादहै, चरितानुवाद नही, चरितानुवाद उसकानामहै,–जिसबातमें तीर्थंकर–गणधरोंका हुकम–न–हो,–और–वो–कामकोइकरे इसलिखनेका मतलब यहहुवाकि–परदेशीराजाका–और–धर्मरुचि–अणगारका उदाहरण–मुताबिकविधिवादके है, चरितानुवादकीतरह, त्यागनेयोग्यनही,–समजसको–तो–समजलो, बात क्याहुइ ? बात यहहुइकि–इरादेधर्मके वचनसेशासनदेना, खासविधिवादहै,–इसमेंकोइशकनही,–हरेकजैनमुनि–जब–व्याख्यान–सभामें धर्मशास्त्रबाचना शुरुकरते है,–तो–यहनिचे दिखलायाहुवा–श्लोकजरुर बोलते है—

अज्ञानतिमिरांधानां–ज्ञानांजनशलाकया,–
नेत्रमुन्मीलितं येन–तस्मै श्रीगुरवे नमः–१

इसका माइना यहहुवाकि–अज्ञानरुपी–अंधकारसें अंधेबनेहुवे शख्शोके नेत्रोमें जिनोने ज्ञानरुपी–शलाकासे–अंजनकिया–उसगुरु महाराजको नमस्कारहो,–देखिये ! इसमें अज्ञानतिमिरांधानां–ऐसा–पाठहै, इसकामतलब क्याहुवा ? सोचो !

(बयान–दीपकरखनेके बारेमें,–)

३८–फिर दलिचंद सुखराज–बयानकरते है, दीपकरखनेकेबारेमें

पुछागयाथा, इसकेजवाबमें कारणसे रखनाकहतेहै, मगर शांतिविजयजी किसकारणसे रखते है,—

(जवाब.) शांतिविजयजी उन्हीकारणसे रखते है, जो-जो-कारण आवश्यकसूत्रके प्रतिक्रमणअध्ययनमें लिखे है, सवालकर्त्ता मजकुर-सूत्र-खोलकरदेखे,—

३९-आगे दलिचंद सुखराज तेहरीरकरते है,-कभी कारणका-सहारा-कभी देशकालकासहारा-कभी रोगादिकासहारा-और कभी कुछ-मगरस्पष्टशब्दोमें जवाबनहीदेना इसकीक्या ! वजह. ?

(जवाब.) इसकी यहीवजहहैकि-जैनशास्त्रोमें जैनमुनिकेलिये कभी कारणकासहारा लेनाकहा, कभी देशकालकासहारा लेनाकहा, कभी रोगादिकासहारा लेनाकहा, शांतिविजयजी पेस्तर स्पष्टशब्दोमें जवाब देचुकेहै, और अबभीदेते है, शांतिविजयजीके जवाबमें कोइक्या गलती निकालेंगे ? उनके जवाबमें तेहरीरकरनेकी जगहनही, जैनशास्त्रोमे जैनमुनिकों रात्रीकेवख्त विहारकरना नहीकहा, मगरकारण आनपडने पर रात्रीकोंभी विहारकरजाना हुकमहै,-उत्तराध्ययनसूत्रमे बयानहै-कि-एकचंडरुद्रनामके जैनाचार्यने रात्रिकेवख्त विहारकिया, देखिये ! यहकारणका सहाराहुवा-या-नही ? जैनशास्त्रोमें जैनमुनिकों चौमा-सेकेदिनोमें विहारनहीकरना, मगर रोगादिकारण आनपडनेपर चौमा-सेकेदिनोमेंभी विहारकरनाहुकमहै, कल्पसूत्रवृत्तिमें पाठहैकि—

अशिवे भोजनाप्राप्तौ-राजरोगपराभवे,
चातुर्मासिकमध्येपि-विहर्तुंकल्पतेन्यतः

देखिये ! इसमे साफलिखाहै,-जैनमुनिकों रोगादिकारण होतो चौमासेकेदिनोंमेंभी विहारकरजाना,-बतलाइये ! यह रोगादिकारणका सहाराहुवा-या-नही ? पेस्तरके जमानेमें जैनमुनि-गांवकेबहार-उ-

ध्यान–बनखंड–या–पहाडोकी गुफामें रहतेथे,–सवालकर्त्ता–बतलावे, आजकल–गावमे–और शहरोमे रहनेका रवाजदिखाइदेताहै, इसकी क्यावजहहै, ? अगर कहाजाय पहलेजैसा–बलपराक्रम–रहा नही, इसलिये देशकालानुसार–चलनापडताहै,–तो–फिर सोचो ! देशकालका सहारालेनापडा–या–नही ?–जमाने पेस्तरके जैनमुनि–दिवसके तीसरेप्रहर भिक्षाकों जातेथे, आजकल दिवसके पहलेदुसरे प्रहरमें जानेकारवाज दिखाइदेताहै,–जैनशास्त्रोमें लिखाहै, जब उपवासव्रत करना–तो–पहलेरोज एकाशनाकरना, और पारनेकेरोजभी एकाशना करनाचाहिये, ऐसीप्रवर्त्ती नजर नहीआती, कहिये ! इसका क्यासबबहै, ?

४०–फिर दलिचंद सुखराज इसदलिलकों पेंशकरते है, व्याख्यानके विना बोलतेसमय मुखवस्त्रिकाकोंआप हाथमें नहीरखते है, इसका क्यासबुतहै, ?

(जवाब.) इसका यह सबुतहैकि,–भाषावर्गणाके पुद्गल चारस्पर्शी है, और वायुकायके जीवोका शरीर आठस्पर्शी होताहै, चारस्पर्शी पुद्गल–वायुकायकेजीवोंकी हिंसानही करसकते,

४१–आगे दलिचंद सुखराज इसमजमूनकों पेंशकरते है, जब शहरधुलियेसे शांतिविजयजी बंबइ गयेथे, जहांजैनोके हजारांघरहै, बहुतसे उपाश्रय और धर्मशाला मौजूदहै, उनकों छोडकर–न्यू–सरदार–आश्रममें ठेरनेका क्याकारण ! बंबइमे वहांका श्रावकसंघ आपकास्वागत करनेकों क्योंनहीआया ?

(जवाब.) बंबइका श्रावकसंघ मेरास्वागतकरनेकों इसलिये नही आयाकि–मेने उनकों खबरनहीदिइथी, और में आंखकीबीमारीकेबारेमें डाक्तरकीराय पुछनेकों और चश्मोकी तलाशकेलिये बंबइगया-

था, अगर-मैं-बंबइके श्रावकसंघकों खबरदेताती-मेरेस्वागतकों-वे-जरुरआते, न-मैंनेखबरदिइ-और-न-वे-आये, कहिये ! इसमेंदलिल क्याथी ? उपाश्रय-और-धर्मशालाछोडकर-न्यू-सरदार-आश्रममें ठहरनेका सबब यहथाकि-वहांकी हवा-आंखकीबीमारीकेलिये फायदेमंदथी, रोगादिकारणसे एकशहरसे दुसरेशहरजाना क्या ! मना है, ? हर्गिज ! नही, ! फिरमुजे इसबातपर कोइ क्या ! ठपका देसकते है, ?

-संवत् (१९७०) की-सालमें शहरपुनेका चौमासा खतमकरके मृगशीरमहिनेमें मेराजाना चश्मोकी तलाशीकेलिये बंबइ हुवाथा, उसवख्त श्रावकोंको खबर नहीदिइथी-तोभी-मालुमहोजानेसे-करीब-दोसो-अढाइसो श्रावक-शिहोर-भावनगर-लींमडी-वढवाण अहमदाबाद-सुरत और मुल्कमारवाड वगेराके मेरेपास आयेथे, और ज्ञानचर्चा होतीथी. एकरौज परेल-मुकामपर जाकरशेठ-गोकलभाइ-मूलचंदजीकी जैनबोर्डिंगमें-मैंने-धर्मकी पुख्तगीपर भाषण दियाथा, आठरौज-बंबइमें ठहरनाहुवाथा, मगर ब-सबब बहुतआदमीयोंकी मुलाकातलेनेके फुरसत कममीलिथी, और चश्मोकी तलाशीकाकामपुरा नहीहुवाथा. सिर्फ ! विलायतसे-जो-डबलब्रीच-फ्रेम-सोर्ट-साइडके चश्मे आयेथे, उसके नंबरोकी तलाशकरनाथा-वो-किइथी. देखिये ! विनाखबर दियेभी-श्रावकोकों मालुमहोनेसे मुजे बंबइमें ज्यादाठहरना पडाथा, अगर-खबरदेकर जाताती-नमालुम-कितनाठहरना पडताथा ?

(दरबयान-स्थंडिलभूमि.)

४२-मैंनेजो पेस्तर तेइससवालोके जवाबमें लिखाथाकि-बडेबडे शहरोमें-जैनमुनि शहरकेबहार स्थंडिलभूमिकों जावेतो-जानआनमें

तीनघंटेलगजावे, फिर धर्मशास्त्र कबबांचे ? इसपर दलिचंद सुखराज लिखते है, तीनघंटेका बहाना बतलाते है, यह गप्पहै,—

(जवाब.) गप्पनही, सचहै, बल्कि ! बंबइ-सुरत-वडोदा-अहमदाबाद-करांची-मुलतान-लाहोर-अमृतसर-देहली-आगरा-लखनऊ-बनारस-कलकत्ता-नागपुर-दखनहैदराबाद-मद्रास--बेंगलोर-और-पुनावगेराशहरोंमें अगर जैनमुनि-बहारशहरके-दिशाजंगलजावे तो-तीनघंटे क्याछहघंटेलगे औरफिरभी जगह-न-मिले, शांतिविजयजी-स्थंडिलभूमिकेये-कभी बहारभी-जाते है, और कभी शहरमें अलग बंधीहुइजगहमेंभी जाते है, शांतिविजयजी किसीबातको उडाते नही, उनकाबरताव जाहिरहै, देखलो ! तुमारे चर्चापत्रपर किसकदर माकुल जवाबदियेहै,—

(पेस्तरकेजैनमुनियोकाठहरना-उद्यान-बनखंडमेंहोताथा.)

४३-मेने-जो-पेस्तर तेइससवालोके जवाबमें लिखाथा-पेस्तरके जैनमुनि-उद्यान-बनखंड-बागबगीचे-या-पहाडोकीगुफामेंरहतेथे, यह बहुतठीकलिखाथा, जैनशास्त्रोंमें हरजगह पाठहैकि-अमुक जैनमुनि-अमुकजगहपरपधारे, और अमुकबागमें ठहरे,—

☞ [ज्ञातासूत्रके पांचमें अध्ययनमेंलिखाहै,-]

तएणं थावच्चापुत्ते णामं अणगारे सहस्सेणं अणागारेसद्धिं जेणेव सेलगपुरे जेणेव सुभूमिभागे णामं उज्जाणे तेणेव समोसढे,—

देखलो ! इसपाठमें साफबयानहै, थावचापुत्र अणगार एकहजार जैनमुनियोकेशाथ सेलगपुरनगरके बहार सुभूमिभागनामके उद्यानमें आनकरठहरे, फिरइसीज्ञातासूत्रके छठेअध्ययनमेंलिखाहै, तीर्थंकरमहावीरस्वामी राजग्रहीनगरीकेबहार गुणशिलनामके बागमेंआनकर सम-

वसये, आगे इसीसूत्रके पनराहमें अध्ययनमेदेखो ! चंपानगरीकेबहार पूर्णभद्रनामके उद्यानमें धर्मघोषनामके जैनाचार्यपधारे, देखिये! एकही ज्ञातासूत्रमें जैनमुनिको गांवकेबहार उद्यान-बनखंडमें ठरनेके कितने पुरावे है,? अगरतमामजैनआगमोमे देखाजायतो सेकडोंपुरावेमिलेगे,-

४४-सवालकर्त्तालिखते है, तीर्थंकरमहावीरस्वामीका अखीरका चौमासा-पावापुरीमें हस्तिपालराजाकी रज्जुकसभामें हुवा,—

(जवाब.) वो-रज्जुकसभा-पावापुरीके बहारथी-या-भीतर ? इसकाखुलासा क्यौंनहीलिखा ? औरयहभी बतलानाचाहिये तीर्थंकर-महावीरस्वामीका समवसरणभी क्या ! उसी रज्जुकसभामें हुवाथा ? अठारांदेशकेराजे-इंद्रवगेरादेवते-जो-तीर्थंकरमहावीरस्वामीके निर्वा-णकेवख्तआयेथे-वे-क्या ! उसी रज्जुकसभामें बेठसकेथे ? इनबातोंसे सबुतहोताहै, पेस्तरकेजैनमुनि-गांवकेबहार उद्यान-बनखंडमें ठहरा करतेथे, आजकल देशकालानुसार गांव-नगरमें ठहरनेका रवाज चलपडाहै,—

४५-मेने-जो-तेइससवालोके जवाबमेंलिखाथा--उत्तराध्ययन-सूत्रमें जैनमुनिको दिवसकेतीसरेप्रहर गौचरीजानाकहाहै, वो-बहुत ठीकलिखाथा, इसपरसवालकर्त्तालिखते है, कल्पसूत्रकीसाधुसमाचारीमे पहले दुसरेप्रहरमेंभी जैनमुनिको गौचरीजानालिखाहै, फिर चोथेकालमें मुनि-पहले दुसरेप्रहरमें गोचरी नहीजातेथे कहतेहो, यह आपकीबात ठीकनही होसक्ती,—

(जवाब.) कौनकहसकते है ठीकनही होसकती, यहबात बेलेबेलेके तपकरनेवाले जैनमुनिकेलिये कही है, सबजैनमुनियोंकेलिये नही कही,दे-खिये ! कल्पसूत्रकी साधुसमाचारीका पाठ यहांदेताहुं इसपर गौरकिजि-ये! **वासावासं पज्जोसवियस्स छठभत्तियस्स भिखुस्स क-**

एयंति दो–गोयरकाला,–इसका माइनायहहुवा कि–बेलेबेले तप करनेवाले जैनमुनि दोदफेगोचरीजावे,–सोभी–पहलेदुसरे प्रहरमेंजावे ऐसाइसपाठमें कहांलिखाहै, ? सबजैनमुनियोंके लिये–तो–दिवसके तीसरेप्रहरमें गौचरीजावे, ऐसा उतराध्ययनसूत्रका फरमानहै, शांतिविजयजी घरकेभेदीहै, कल्पसूत्रकी साधुसमाचारीका पाठ उनसे छुपाहुवा–नहीहै, उत्सर्गमार्गमें–जैनमुनिकों दिनमें एकहीदफे आहार खाना कहा, जिसको शकहो–दशवैकालिकसूत्रदेखे,

४६–मैंने–जो–तेइससवालोंके जवाबमें लिखाथा, एक–मैथुनभावकों छोडकर दुसरे जितनेकार्यहै, जैनमुनि उनमें फायदाधर्मका देखे–वैसाकरे, यहबहुतठीक लिखाथा, इसपर सवालकर्त्ता लिखते है, जैनशास्त्रोमें–तो–पांचोमहाव्रतोंकी रक्षाकरना जैनसाधुका कामहै,–

(जवाब.) अगर ऐसाहै,–तो–जैनशास्त्रोमें मैथुनव्रतकेलिये एकांतनिषेध क्योंकहा ? इसका जवाब देसको तो दो, इसदलिलमें तेहरीरकरनेकी जगहनही,–फिर कोइक्या बारीकी निकालसकेगा, ?–दरअसल ! समजनेकी बातभी यहीहै,—

४७–आगे दलिचंद सुखराज बयानकरतेहै, हमनेप्रश्नोके अंतमे लिखाथा,–शांतिविजयजी सचेजैनधर्मकेरागी और सत्यवक्ताहै,–तो–हमारेपुछे प्रश्नोकेउत्तर निष्कपटहोकर सत्यदेदेवेगे,—

(जवाब.) मेने पेस्तर तुमारे तेइस–सवालोकेजवाब सत्यसत्यदेदियेहै, और अबभी देरहाहुं. मेरेदफतरमें माकुलजवाबोकी कमीनही सत्यकभी छिपतानही, दुनियामें कहलावतहै,–साचकोंआंचनही,—

४८–फिर दलिचंद सुखराज तेहरीरकरतेहै–में–समजताथा, सत्यकहेगें, परंतुसत्यको छिपाकर व्यर्थकुतर्क कियेहै,—

(जवाब.) शांतिविजयजी सत्यकोंछिपातेनही, अपनेरैलविहार-कोभी जाहिरकरते है-तो-दुसरीबातकों क्यौंछिपायगे ? शांतिविज-यजीके व्यर्थकुतर्क कोइसाबीतकरे, कोरीबातें बनानेसे कामनहीचलता, सत्यबातका खंडन-न-होसके-तबएसाही कहनाबनताहै,—

४९-अखीरमें दलिचंद सुखराज लिखते है, समग्रसंवेगी जैनमु-नियोकों-चाहिये, शांतिविजयजीतर्फसे-जोजो-बातेशास्त्र विरुद्धछपे, उसकाखंडन कियाजाय, अगर ऐसानहीकियाजायगा-तो-संवेगी मुनिधर्मकी इसमेंहानिहै, में-समजताहुं-भविष्यसुधारनमें इसबातका समर्थन सबकोइ सुविधमुनिकरेगे,-संवेगीमुनियोंका चरणसेवक-दलि-चंद सुखराज-धुलिया,—

(जवाब.) चाहेकोइ संवेगीजैनमुनिहो,-या-कोइ दुसराहो,-जि-सकीमरजीहो, मेरेलेखपर टीकाकरे, में-जवाबदेनेको तयारहुं, शांति-विजयजीकीतर्फसें कोइबात जैनशास्त्रके विरुद्ध जाहिरनहीहोती, फिर कोइ-क्या! खंडनकरेगा, इतनेपरभी जिसकीमरजीहो-ब-जरीयेलेखके सामनेआवे, में-जवाबदेनेकों मुस्तेजहुं, विद्वान्लोग खुदसमजलेयगें, किसका कहनासत्यहै,—

[दलिचंद-सुखराजकेलेखका जवाब खतमहुवा,-]

[जेसिंग-सांकलचंदके लेखकाजवाब.-]

(जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजी तर्फसे,-)

सन (१९१५)-अगष्टके जैनशासन अखबारमें-जेसिंग-सांकलचंदने मेरे संबंधमें जोकुछलिखाहै, उसकाजवाब इसमेंदेताहुं सुनिये!

१—अपनेलेखकी शुरुआतमें जेसिंग-सांकलचंद लिखते है, हुं-गुजरातनो समोगामनो रहनारछुं. गुजरातना रहनारमाणसने साधुमुनिराजना व्यवहारनो अनुभव बीजादेशवालाकरतां वधारेहोय-ए-स्वाभाविकछे, थोडामहिना थयां-हुं-अत्र धुलियेरहुंछुं.—

(जवाब.) जैनमुनिके व्यवहारका अनुभव जहांजहां जैनमुनि विचरते है, वहांके श्रावकोंको होताहै,-सिर्फ! एकदेशके श्रावकोंको होवे ऐसानियमनही, मुल्कमारवाड-पंजाब-राजपुताना-बंगाल-मध्यप्रदेश-वराड-खानदेश-मालवा-और दखनके श्रावकलोकभी जैनमुनिके व्यवहारसें अछीतरह जानकारहै,—

२—आगे जेसिंग-सांकलचंद बयानकरतेहै, शांतिविजयजी संवेगीसाधुकहरावी-ते-माफिकवरतणुक करतानथी,-ते-जोइ मने आश्चर्य लाग्युं, परंतु गुजराततर्फनो-हुं-एकलो होवाथी मने बोलतां अटकाव थवा मांडयो,—

(जवाब.) सचकहनेमें अटकाव क्यौंहुवा? और किसने किया? शहरधुलियेमें तुम खुद मेरीव्याख्यानसभामें धर्मशास्त्रसुननेको-आतेथे, अगर मेरा बरताव मुनिधर्मसे विरुद्धथा-तो-क्यौं आतेथे? इसका जवाबदो, क्या! उसवख्त-में-इरादेधर्मके रैलमें नही-बेठताथा?

शांतिविजयजी जब शहरधुलियेके टेशनपर आयेथे, धुलियेके जैनश्वेतांबर श्रावकोने-मयबेंडबाजावगेरा जुलुसके पेशवाइ किइथी ? अगर शांतिविजयजीका बरताव मुनिधर्मसे-विरुद्धहोता-तो-ऐसी भक्ति क्यौंकरते, ? शांतिविजयजीका बरताव मुताबिकमुनिधर्मकेहै, जभी-तो-उनको हिंदमें गांवगांव और शहरशहरमें माननेवाले श्रावक मौजूदहै, यूंतो तीर्थंकरदेवोकोंभी कइलोग तीर्थंकरतरीके नहीमानतेथे, इसीतरह शांतिविजयजीकोभी किसीने साधुतरीके नहीमानेतो क्या हुवा ? जिसकी मरजीहो-माने, जिसकीमरजी-न-हो-न-माने, शांतिविजयजी-जिसश्रावकमें श्रावकके (२१) गुण और (१२) व्रतमौजूदहो,-उसको श्रावकतरीके मानतेहै,—

३—फिर जेसिंग-सांकलचंद बेहरीरकरतेहै, शेठ दलिचंद खीवेसरा तर्फथी जेजेप्रश्नोपुछवामां आवेलछे, तेनो जवाप बीजातर्फथी प्रगटकराव्योछे, ते-लेख-मने सत्यथी वेगलोजणायाथी जाहिर खुलासो करवानो विचारथयो.—

(जवाब.) चाहे जितने कोइ जाहिरखुलासे करे, मेरेपास माकुल जवाबोंकी कुछकमीनही, कइमहाशयोके सवाल मेरेपास आतेहै, और-मैं-जवाब-देताहुं. तुमारेजाहिर खुलासेका जवाबदेना कौनमुश्किलबात थी ? दलिचंद-खीवेसराके (२३) सवालोके जवाब पेस्तरदियेथे-और उनोने उसपर फिरभी जोकुछलिखाथा उसकाजवाबभी मेरी तर्फसे दियाहुवा इसकिताबकी शुरुमेंदर्जहै, बखूबी देखलो ! मेरालेख सत्यसेदुरहै ऐसाकोइ साबीतकरे, शांतिविजयजी इरादेधर्मके रैलमेंबेठतेहै,-तोभी हरेकशहरकेश्रावक उनको मानतेहै, भक्ति करतेहै, और चौमासाठहरनेका विनतिकरतेहै यहभीएक ताज्जुबकी बातहै-या-नही ?

४—आगे देवदर्शनके बारेमें-प्रतिक्रमणके बारेमें और-सुगंधी तेललगानेकेबारेमे जोकुछपुछाहै, उनकाजवाब इसकिताबकी शुरुमेंछ-पाहुवा मौजूदहै, ब-खूबी देखलो ! शांतिविजयजी व्याख्यानवगेरा-के वख्त मुखकेआगे मुहपति रखते है, स्थंडिलभूमिकेलिये शांतिवि-जयजी कभी बहारशहरके जाते है, कभी शहरमें अलगबंधीहुइ जग-हमें जाते है, अविनयी शिष्यको-वचनसेशासनदेनेकेबारेमें आवश्यक सूत्रकापाठ देचुके है, इसकिताबकी शुरुमेंदेखलो, और अपना-शक-रफा करलो,

५—फिर जेसिंग-सांकलचंद इसमजमूनकों पेशकरते है, गृह-स्थना व्यवहारमां तथा शांतिविजयजीना व्यवहारमां मात्र फर्क एट-लोजछे, गृहस्थ कमाइने खायछे, शांतिविजयजी भिक्षावृत्तिकरेछे,—

(जवाब.) शांतिविजयजीका बरताव-जिसको गृहस्थसमान दिखाइदेवे-वह-उनकों साधुतरीके न-माने, और-उनकेपास-न-आवे, शांतिविजयजी किसीको कहनेनही जातेकि-आपलोग मुजको साधुतरीके मानो, धर्म-जोराजोरी नहीहोता, श्रद्धासेहोताहै, शांतिवि-जयजीका बरताव अगर गृहस्थकेसमानहोता-तो-हिंदके गांवगांवके श्रावक-उनको जैनमुनितरीके क्यों मानते, ? दुर क्योंजाना, शहर धुलियेसे मेराजाना जब-सोरपुरहुवाथा-जोकि-कुछ (१८) कोशके फासलेपरवाकेहै,-सीरपुरकेश्रावक-नलडाना-टेशनतक मेरेसामने आ-येथे, जब सीरपुरके करीबपहुंचे,-श्रावकलोगाने मयबेंडबाजावगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ, संवत् (१९७२) मे-प्रथमवैशाखमें मेराजाना सिर्फ ! आठरोजकेलिये सीरपुरहुवाथा, मगर वहांके श्रावकोने मुजे बडीविनतिकरके चौमासा ठहरायाथा,-बहुत भक्तिकिइथी, ज्ञानके काममें द्रव्यखर्चकरके धर्मको तरकी दिइथी, अगर मेराबरताव मुता-बिक गृहस्थकेहोता-तो-ऐसा क्यों करते, ?

६—सीरपुर–जिलेखानदेशका चौमासाखतमकरके–तीर्थभांडक-की–जियारतकिइ, और जब–ब–मुकाम आकोले आनाहुवा, चालिश गांवके श्रावकोने विज्ञप्तिपत्र भेजाकि–आप हमारे शहरमें तशरीफ लावे, और हमकों तालीम धर्मकीदेवे, मेने उनकी विनति मंजुर किइ, और आकोलेसे बसवारी रैल–संवत् (१९७२) के पोषसुदी एकमके रौज–टेशन–चालिशगांवपर उतरा, चालिशगांवके श्रावककछी–मारवाडी–और गुजराती मीलकर मयबेंडबाजा–वगेराजुलुसके पेंशवाइकों आये, और शहरमे प्रवेशकरवाया, उसवख्त श्रावकोंने अपनेघरोंपर धजापताका औरसाइनबोर्ड लगायेथे, तारिख (२३) जनवरी सन (१९१६) के जैनअखबारमें देखलो, तमामहाल उसमेछपाहै, अगर शांतिविजयजीकों–मुनितरीके–नही मानतेहोते–तो–अैसाजलसा क्यों करते, यह जिक्र–शहरधुलियेकी इर्दगिर्दकाहै, अगर तमामहिंदुस्थानके जैनश्वेतांबरश्रावक–जो–जो–शांतिविजयजीको मुनितरीके मानतेहै,–उनका बयान लिखाजाय–एककिताब बनजाय,—

७—आगे जेसिंग–सांकलचंद लिखतेहै, छापाओमां पोतानी खोटीप्रशंसा छपावी जैनप्रजाने भूलमांनाखी शास्त्रना जुठासाचा आधारो बतावी मुनि कहराववा कोशिशकरेछे,—

(जवाब.) शांतिविजयजी खुद जैनमुनि है–फिर मुनिकहलानेकी कोशिश क्योंकरेगे, ? जोकोइ श्रावक शांतिविजयजीकों जैनमुनितरीके–नहीमानतेहो–वे–उनकेपास–न–आवे, वंदना––नमस्कार––न–करे, शांतिविजयजीकों जैनमुनितरीके माननेवाले श्रावकहिंदमें गांव गांव और शहरशहरमें मौजूदहै, मेने अपनी झूठीप्रशंसा किसछापेमें छपवाइहै–साबीतकरो, शास्त्रके झूठेआधार किसजगहबतलाये है, इस बातकोंभी साबीतकरो, शांतिविजयजी जैनप्रजाकों भूलमें नहीडालते, बल्कि ! सचसचबातालिखकर फायदापहुचाते है, शांतिविजयजीने

संवत् (१९३६) की सालमें मुल्कपंजाबमें दीक्षा इख्तियार किइ, बीसवर्सतक पैदलविहार करतेरहे, संवत् (१९५६) की–सालमें जब तीर्थ–समेतशिखरकी जियारतकों गये, शहर लखनउसे रैलमें बेठकर सफरकरना शुरुकिया, और किताब–जैनतीर्थगाइड बनाइ, जब पैदलविहारकरतेथे तबभी जैनश्वेतांबरसंघमें उनकी वही भक्ति होतीथी, और अबभी वैसीही होरही है,–कहिये ! शांतिविजयजीकों मुनिपनेमे खानपान–वस्त्रपात्र–या–मकानके मिलनेमे–या–सेवाभक्ति- में किसबातकी कमी है. ? जोजो जैनमुनि निस्पृही–सत्यवक्ता–और अपने पूर्वसंचितकर्मपर भरुसा रखनेवाले है,–उनकों हमेशां योग्य चीज मिलतीरहती है,—

[दरबयान विद्यासागर न्यायरत्न पदवी,]

८—फिर जेसिंग–सांकलचंद इसदलिलकों पेंशकरतेहै, पोते विद्यासागर–न्यायरत्न लखेछे, पण एपदवी कोणेआपीछे, एनो खुला- सोकरशे, मारा धारवाप्रमाणे–तो–कोइये पण आपेलनथी, छतां कोइ आपनार तेनो खुलासो करशे तो सारीवात थशे,

(जवाब.) में–खुद खुलासाकरताहुं, सुनिये ! विद्यासागर न्या- यरत्नपदवी शहर–रतलामके जैनश्वेतांबरसंघने संवत् (१९५४) मे दिइहै और उसका बयान शहर–अहमदाबाद–मासिकपत्र जैनदिवा- करके पुस्तक (१४) अंक (५) तथा (६) मार्च–एप्रिल–सन (१८९९) के–अंकमें–छपाहै, मंगवाकर देखलो ! और अपना शक रफा करलो ! जब मजकुरपदवी दिइथी–उसवख्त एक मानपत्रभी दि- याथा, वोभी उपरबतलायेहुवे जैनदिवाकर मासिकपत्रमे छपाहै, साचको आंचनही. और दुनियामें सत्य कभी छिपतानही,

९—आगे जेसिंग–सांकलचंद इसमजमूनकों पेंशकरते है, हुं-

थारूंछुं गुजरातनारहनार धर्मीजीवोने शांतिविजयजीना शाथमां एक ठेकाणे रहेवानो संयोगमले–तो–तेओ–शांतिविजयजीने साधुतरीके स्वीकारशे नही,—

(जवाब.) मुल्क–गुजरातके–कइ–धर्मीश्रावक शांतिविजयजीके सहवासमे एकशाथ रहचुके है, और ऊनोने शांतिविजयजीको साधुतरीके स्वीकारे है, ऊनकी चीठियेंआतीहै, सवालपुछते है, और धार्मिक काममें रायलेते है, जैनअखबारमें गुजरातके कइश्रावकोंके मेने जवाब दियेहै, जैन–एसोशिएशन–ओफ–इंडियाके पत्रमेरेपास आते है, सिद्ध-क्षेत्र–बालाश्रम–सिद्धक्षेत्र–यशोविजय–जैन–संस्कृत–प्राकृतपाठशाला बोर्डिंग–पालिताना–श्रीयशोविजयजीजैनग्रंथमाला ओफिस भावनगर जीवदयाज्ञानप्रसारकफंड बंबइकीचीठियां–रिपोर्ट–वगेरा–मेरेपासआते है, इतनेपरभी जिसश्रावककी मरजी–मुजको साधुतरीके माननेकी–न–होवह–मुजको–साधु–न–माने, मुजको साधुतरीके माननेवाले श्रावक हिंदके गांवगांव–और–शहरशहरमें माजूदहै,—

१०—फिर जेसिंग–सांकलचंद लिखते है, जैनछापावालाओ पण एवातनी तपाशकरशे, तो–जरुर मारुंकहेवुं केटलेअंशे साचुंछे–ते पोतानीमेले समजीशकशे,—

(जवाब.) जैनअखबारवालोने तलाशकरलिइहोगी, जभी–तो–मेरेलेखोकों अपनेअखबारमें स्थानदेतेहोगे,—

११—आगे जेसिंग–सांकलचंद बयानकरते है, डुंगरदुरथी रलियामणा लागेछे,—

(जवाब.) जिसपहाडपर जिनमंदिरबनेहुवे–होते है–वे–नजदीकसेंभी अछेदिखाइदेते है, इसीतरह अगर शांतिविजयजीमे श्रद्धाज्ञान–और–चारित्ररुपीगुण विद्यमानहोगे–तो–वे–नजदीकसेभी अछे क्यौं–न–दिखाइदेंगे, ?

१२—फिर जेसिंग सांकलचंद तेहरीरकरते है, शांतिविजयजी-नुं जोइ बीजापण-बे-चार-मुनिराजो रैलवेमां बेसवालागीगयाछे, तेथी जैनसंघने-ते-बाबतमां उंडो विचारकरवो जोइये,—

(जवाब.) चाहे जितना उंडाविचार जैनसंघकरे, कोइमनानही करता, शांतिविजयजीकी देखादेखी-जो-दो-चार-जैनमुनि-रैलमें बेठनेलगगये है-तो-उनोनेभी धर्मोपदेशका कुछफायदा देखाहोगा, जभी बेठनेलगेहोगे, जैसाउनका इरादाहोगा, वैसा उनको फलमिलेगा, जैसे इरादेधर्मके जैनमुनि नावमेबेठते है, वैसे इरादेधर्मके रैलभी एकतरहका साधनहै,—हां ! अपनेशौखसे-या-आरामकेलिये अगर कोइ जैनमुनि रैलमें सफरकरे-तो-बेशक ! पापहै,

१३—आगे जेसिंग-सांकलचंद इसदलिलको पेशकरते है, महाराजश्रीआत्मारामजी विजयानंदसूरिना संघाडाना--तथा--बीजा मुनिराजो पण एबाबतनो खरोविचारकरी मुनिधर्मथी विरुद्धवर्तनाराओने माटे कांइपण उपाय योजवाने प्रयत्नकरशे,

(जवाब.) चाहे श्रीमान्-विजयानंदसूरि महाराजके शिष्यहो-या-कोइ दुसरेजैनमुनिहो, जिसकी जैसी मरजीहो-वैसा प्रयत्नकरे, इससे मुजेक्या ? मे-इनबातोसे खौफ नहीलाता,

१४—अखीरमें जेसिंग सांकलचंद इसमजमूनको पेशकरते है, मे-जे-लख्युंछे, ते-माराअनुभव उपरथी लखेलछे, एबाबतमां कोइना उपरखोटो आरोपमुकवाना हेतुथी लखेल नथी,

(जवाब.) मेने जोकुछ सवालकर्त्ताके जवाबमे लिखाहै,-मुताबिक जैनशास्त्र और दाखलेदलिलोके लिखाहै, इसको अवलसे अखीरतक पढे, और सचबातका इम्तिहान करे,

(जेसिंग-सांकलचंदके लेखका जवाब खतमहुवा,-)

[दक्षिणनिवासीके लेखका जवाब,-]

(जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजी तर्फसे,)

सन (१९१५) अगष्टके जैनशासन अखबारमें एक दक्षिणनिवासीके नामसेजिसने मेरेबारेमें लेखलिखाहै, उसका जवाबदेताहुं, सुनिये!

१—दक्षिणनिवासी अपनेलेखकी शुरुआतमे लिखते है शांतिविजयजी प्रतिपादनकरेछे, रैलमां बेसवुं, सुगंधीतेल लगाववुं, रेशमीरुमाल राखवो ए सर्ववात शास्त्रमां लखीछे,

(जवाब.) जैसे शांतिविजयजी प्रतिपादन करते है, इरादेधर्मके जैनमुनिको रैलमेंबेठना, और मुल्क-ब-मुल्कमे जिज्ञासुलोको धर्मोपदेशदेना ठीकहै, वैसे जैनशास्त्रभी प्रतिपादन करते है, इरादेधर्मके जैनमुनिकों नावमेंबेठना, हरेकगांव-नगरमें विहारकरना और जिज्ञासुलोगोकों धर्मसुनाना,—नावकेचलनेसे पानीके जीवोकी हिंसाहोती है, मगर इरादेधर्मके भावहिंसानही, वेसे इरादेधर्मके जैनमुनिकों रैलमेंबेठनेसे भावहिंसानही, जैसेनाव एकतरहका वाहनहै, रैलभी एक तरहका वाहनहै, और-वो-एकशख्शकेलिये नहीचलती, उसके टाइमपर आतीजाती है, जैनमुनिको कचेपानीका स्पर्शकरना मनाहै, मगर इरादेधर्मके छोटीनदीमें पांवदेकर उतरना हुकमहै, कहिये! इरादेधर्मकी सडक कैसीमजबूतहै, जिसको-तीर्थंकर-गणधरोने मंजुररखी है, हरीवनास्पतिका स्पर्शकरना जैनमुनिकों मनाहै, मगर विहारकरते वख्त-किसी खाडेमें गिरजाय तो इरादेदेहरक्षाके लतावेलडीकों पकडकर उपर आजानाहुकमहै,—अब सुगंधीतेलकेबारेमें जवाबसुनिये! जैनशास्त्रोमें बयानहै, रोगादिकारणसे जैनमुनि-शतपाक-सहस्रपाक-लक्षपाक वगेरा तैलइस्तिमाल करे, खयालकरो, लक्षपाकतैल

कितनीखुशबू रखताहोगा ? फिर आजकलका सुगंधी तैल कौनगिनतीमे रहा ? रेशमीरुमालकेबारेमें जवाब सुनिये ! जैनमुनिकों जरीका कपडा रखनामनाहै, रेशमी–उनी–सूती कपडेरखना मनानही,–जब–पश्मीनेकी चद्दरे–और–गर्मधुस्से रखनेका रवाज नजरआरहाहै,–तो–रेशमीरुमाल किसगिनतीमे रहा, ?

२—आगे दक्षिणनिवासी बयानकरते है, क्यां जैनशास्त्रनो त्यागमय वैराग्यमय–अने–व्यवहारमयउपदेश अने क्यां ! आवी अपवादनी प्ररुपणा–छुटथी व्यवहारमांलइ संवेगीजैनोंनागुरुनो फांकोराखनारा आवा धर्मगुरु ?

(जवाब.) संवेगी–जैनोके गुरुओको–तो–दिवसके तीसरेप्रहर गोचरी जानाचाहिये, दिवसके पहलेप्रहरमे चाहदूधकी गवेषणाकरनेकी क्या जरुरत ? संवेगीजैनोके गुरुओकों–तो–मुताबिक जैनशास्त्रके जीर्णप्रायवस्त्र लेनाचाहिये,–नयेमलमल और–जगन्नाथीसे क्याजरुरत ? संवेगी जैनोके गुरुओकोतो मुताबिक जैनशास्त्रके–उद्यान बनखड–या–पहाडोकी गुफाओमे रहनाचाहिये, नवकल्पी विहारकरना चाहिये, विहारकेवख्तभी नोकरचाकर–या–श्रावककी सहायता नही लेनाचाहिये,–और दिवसमें एकहीदफे आहारकरना चाहिये, जब–उपवासकरनाहो–तो–पहलेरौज–और उपवासके पारनेकेरौज एकाशना करनाचाहिये, क्यौंकि–जैनशास्त्रोमे लिखाहै, उपवासमें–चारटंक–खाना–छोडना, बेलेकी तपस्याकरनेवालोको छह–टंक–छोडना, और तेलेकी तपस्या करनेवालोकों आठटंक–खाना छोडनाकहा, त्यागमय और–वैराग्यमय उपदेशपर अमलकरनेवाले जैनमुनिकों बेतालीश तरहके दोषोको बचाकर आहारलेना चाहिये, बांसका दंडा रखना चाहिये.

अगरकहाजाय-पहलेजैसा-बलपराक्रम नहीरहा, वीतरागसंयम नहीरहा, सातमेगुणस्थानके आगेके गुणस्थान नहीरहे, इसलिये द्रव्यक्षेत्रकालभाव देखकर चलनापडताहै, फिर द्रव्यक्षेत्रकालभावकी सडकपर चलिये, कोरीबातेंबनाना क्याफायदा ? पंचमहाव्रतधारी-क्रियापात्र-पूर्णसंयमी जैनमुनिकों उत्सर्गमार्गमे बरतावकरनाचाहिये.-

[बयान व्रतनियमकेबारेमे,-]

३—जैनशास्त्रोमे लिखहै,-जैनमुनि-किसीशख्शकों जोराजोरी व्रतनियम-न-करावे, जिसकी मरजीहो-वो-करे, जिसकी मरजी-न-हो-वो-नकरे, तीर्थंकर-गणधरोनेभी किसीकों विनामरजीके लियाहुवा-व्रतनियम-लेनेवाले अछीतरह पालतेभी-नही, धर्मका उपदेशसुनकर व्रतनियम-लेवेतो अछाहै, व्याख्यानधर्मशास्त्र सुननेके लियेभी-जिसका भावहोगा-वो-आयगा, जिसका भाव-न-होगा-वो-नहीआयगा, धर्म-अपनीश्रद्धासे होताहै, धर्ममें जोराजोरी नही चलती, व्याख्यानधर्मशास्त्र बांचनेवाले जैनमुनि-विद्वान्-सत्यवक्ता-और-सबकों समजमें आवे-ऐसा व्याख्यान देतेहोंगे तो सुननेवाले खुद चलेआयगे, नही-तो-व्रतनियमदेनेसेंभी नहीआयगें,—

४—फिर दक्षिणनिवासी तेहरीर करते है, सुकोमल-ग्लान-रोगी-अथवा बालसाधु-के-एवा कोइप्रसंगे पालीशके तेम-न-हो, तो छेवटे साधुपणुं-छोडीदेवानो प्रसंगआवे-तो-जाणकार कुशलसाधु अपवाद पणसेवे,

(जवाब.) देखिये ! यहां दक्षिणनिवासी खुदलिखते हैकि-कोइप्रसंग आनपडनेपर जानकार कुशलसाधु अपवादमार्गभी सेवे,-उंचीउंचीबाते बनाना सहजहै, मगर मुताबिक उसके अमलकरना

सहजनही, इन्साफ कहताहै, दक्षिणनिवासीकों तो–उत्सर्गमार्गपर खयालकरना चाहिये, कारणपडनेपरभी कमजोर मार्गपर क्यौंजाना–चाहिये, अगरकहाजाय कारणपडनेपर तो–अपवादमार्ग सेवन करना चाहिये, तोफिर शांतिविजयजी और क्या कहते है,–इसबातपर शांतिविजयजीको कोइक्या ठपका देसकते है ?

५—धर्मकाममें दुसरोका कमजोर बरतावदेखकर अपनी धर्मश्रद्धाकमजोर नहीकरना चाहिये, जिसश्रावककी धर्मश्रद्धा दुसरोका शिथिल बरतावदेखकर कमजोर होगइ–वो–श्रावकही क्या ? में–दुसरोका कमजोर बरतावदेखकर अपनीधर्मश्रद्धामें कचापन नही लाता, जोजो साधु–साधवी–श्रावक–श्राविका–अपनीधर्मश्रद्धामें पाबंदरहते है, उनकी तारीफहै सबजीव–अपनेअपने पूर्वसंचितकर्मके अनुसार बरताव करसकते है, शांतिविजयजी चौमासमें विहार नही करते, अगर उसशहरमें–बीमारीचलपडे–तो–करतेभी है,–शांतिविजयजी दखनहैदराबाद–सिकंदराबाद–और–तीर्थकुल्पाकजी तर्फ–विचरचुके है, तीर्थ कुल्पाकजीके मंदिरका जीर्णोद्धार उनके उपदेशसे हुवाहै, कोइ अैसानही कहसकताकि–उनोने जैनश्वेतांबरधर्मकी कमजोरी करबताइहो,–लेखक तलाशकरे,—

[दक्षिण निवासीके लेखकी पूर्णता,–]

६—अखीरमें दक्षिणनिवासी इसमजमूनकों पेंशकरते है, छेवटे सेवककी नम्रप्रार्थना एछेके–आनेमाटे श्रीसंघ विचारकरशे, अने दिवसे दिवसे मूर्तिपूजकोनी श्रद्धा हठावनारा आवा साध्वाभासो सामा चांपता इलाजलेशे,

(जवाब.) चाहे जितनेइलाज श्रीसंघ–लेवे, शांतिविजयजी

किसीकों मना नहीकरते, साध्वाभास-वे-होतेहो, जो दिलमें बरताव जुदा और बहारका बरताव जुदा रखे, इसका मतलब यहहुवाकि-दिलमें धर्मपर श्रद्धानही, और उपरसे साधुका बरतावरखे दक्षिणनिवासी लिखतेहै, आवा साध्वाभासोकेलिये श्रीसंघकुछ इलाजलेवे, जवाबमें मालुमहो, शांतिविजयजीका इसमें कोइनुकशान नही, औरइसबातका खौफ शांतिविजयजीको ख्वाबमेंभी-नही—

७—स्थानांगसूत्रमें साफलिखाहै, यहजीव जगतमें अकेलाफिरताहै, इसको अगरआधारहै-तो-देवगुरुधर्मकाही है, शांतिविजयजी मुल्क दखनहैदराबाद-और-मद्रासमें सफरकरचुकेहै, कइश्रावकोकों तालीमधर्मकी देकरधर्ममें पाबंदकिये है, शांतिविजयजीने जब संवत् (१९३६) वैशाखसुदी दशमीकेरोज मिथुनलग्नकेवख्त-शहर मलेरकोट-मुल्कपंजाबमें दीक्षा इख्तियारकिइ, पैदलविहारसे मुल्कोकी सफरकरना शुरुकिया, विशवर्सतक पैदलविहारसे मुल्कपंजाब-मारवाड-मेवाड-गुजरात-राजपुताना-और-मालवावगेरामें सफरकिइ, संवत् (१९५६) में-जब मेराचौमासा शहर लखनउमेंहुवा, और वहांसे जब-तीर्थ-समेतशिखरजीकी जियारतकों जानेकी तयारीकिइ आगे रैलमेंवेठकर सफरकरना शुरुकिया, वीशवर्सतक पैदलविहारसे और बाद रैलविहारसे--मुल्क-अंग-बंग-कलिंग-मगध-कौशल-राजपुताना-मध्यप्रदेश-वराड-खानदेश-मालवा--दखन-तैलंग-कर्णाटक-महीशूर-कोकन-मारवाड-मेवाड-सिंध-और-पंजाव--तर्फ कइदफे जानाआना हुवा और होताहै.

८—मेरीतर्फसे बनेहुवेग्रंथ-आर्यदेशदर्पण-मानवधर्म संहिता-रिसालामजहबढुंढिये-जैनसंस्कारविधि-त्रिस्तुतिपरामर्श-बयान पारसनाथपहाड-जैनतीर्थगाइड-सनमपरस्तिये जैन-न्यायरत्नदर्पण-छपकर

जाहिर होचुके है, इनमेसे किताब जैनतीर्थगाइड–त्रिस्तुतिपरामर्श–और न्यायरत्नदर्पण–ये–थोडीनकल सीलकमें रही है, शिवाय इसके सबकिताबे बीकगइ, किताब–मानवधर्मसंहिता–जिसकी किंम्मत दो–रुपयेथी, मगर पनरांपनरांरुपये देकर ग्राहकोंने खरीदलिइ, और जितनीछपीथी तमाम बीकगइ, कोइमहिना अैसा नहीजाता जिसमें इसकी मांग मेरेपास–न–आतीहो, जैनपत्रमें कइवर्सोसे मेरेलेख छपते है, जब–में–दुसरोके सवालोका जवाबदेताहुं–तो–मेरेपर कियेहुवे सवालोंका जवाब क्यौं–न–दुंगा,–ब–सबब कमफुरसतके चाहे कोइ वख्त देरहोजाय, मगरजवाब जरुरदेताहुं. अैसा खयाल कोइ–न–करेकि–जवाब–न–देयगें,

[अखीरभाग–चर्चापत्र,–]

जमानेहालमें अगरकोइ जैनश्वेतांबरमुनि–अपनेदिलमें अैसाखयालकरेकी–हम–उत्कृष्ट–क्रियावान् और पूर्णसंयमी पंचमहाव्रतधारी मुनि है,–तो–उनकों मुनासिबहै,–नवकल्पी विहारकरे, यानी–मोशिमे शर्द–या–गर्मकेदिनोमें एकमहिनेसे ज्यादा–न–ठहरे, और मोशिमे वारीशके दिनोंमें चारमहिनेसे ज्यादा–एक–गांवनगरमें–न–रहे, विद्यापढनेके लियेभी–किसीगांवमें–शहरमें–या–पाठशालामें–एकमहिनेसे–या–चौमासेके चारमहिनोसे ज्यादा–न–रहे, क्यौंकि–चारित्रमे शिथिलता होगी, अगरकहाजाय इरादे विद्यापढनेके–रहे–तो–क्या हर्ज है ? जवाबमें मालुमहो,–विद्यापढनेके लियेभी चारित्रमें शिथिलता क्यौंलाना ? मुनासिबहै,–विद्याभी पढतेरहना, और विहारभी करतेरहना, अगरकहाजाय इरादा विद्यापढनेकाहै, विद्यापढेगेंतो आगे ज्ञानका फायदाहोगा,–तो–जवाबमें मालुमहो,–रैलविहारमेंभी इरादा धर्मोपदेशका है, धर्मका उपदेशदेयगें,–तो–आगे धर्मका फायदा

होगा, ऐसाकहना कौन बेइन्साफहै,-? उत्कृष्ट क्रियावान्-पूर्णसंयमी जैनमुनि विहारकेवख्त-श्रावक-या-नोकरचाकरकी सहायता-न-लेवे, असहायकहोकर विहारकरे, दिवसके तीसरेप्रहर भिक्षाको जावे, क्योंकि-जैनशास्त्र उत्तराध्ययनसूत्रमें-जैनमुनिको दिवसके तीसरे प्रहर गौचरीजाना कहा, जैनमुनिदिनमें एकहीदफे आहारकरे, क्योंकि-दशवैकालिकसूत्रमें जैनमुनिको दिनमे एकदफे आहारखाना कहा, विहारके वख्तभी कंतानके मौजे-न-पहने, सबबकि-उत्तराध्ययन सूत्रमें धूपठंडवगेरा परिसहसहनकरना कहा, दिनमे जैनमुनि-नींद-न-लेवे, सोने-चांदीकेफ्रेमके चश्मे-न-पहने, चाहदूधकी गवेषणा-न-करे, उत्कृष्टक्रियावान पूर्ण-संयमीको स्वादकी जरुरतनही.-किसी-गांव-शहर-या-मकानपर कोइजैनमुनिममता-न-करे, श्रावकोको मुनासिबहै,-जो-जो-जैनमुनि पंचमहाव्रतधारी देखे उनको धर्मगुरुतरीके माने, और सेवाकरे, ऐसाखयाल-न-लावेकि-ये-जैनमुनि हमारेगछके-या-हमारेउपाश्रयके नही है,-सबजैनमुनिको मुनासिब है,-सबश्रावकको अपना श्रमणोपासक-समजे, ऐसाखयाल-न-लावेकि-यहश्रावक हमारेगछका-या-समुदायका नही है, जैनमुनिको मुनासिबहै-व्याख्यान धर्मशास्त्रकादेते वख्त-सबश्रावकपर एकसमान बरतावरखे, दौलतमंदश्रावकको आगे-न-बुलावे, और गरीबश्रावकको पीछे-न-हठावे, व्याख्यानसभामें-जो-पहलेआवे-आगेबेठे, और पीछेआवे पीछेबेठे,—

हरेकजैनमुनिको लाजिमहै,-जिसमुल्कमें-धर्मोपदेशका फायदा ज्यादा देखेउधर विहारकरे, मुल्कगुजरातमें जैनमुनिके विहारकी उतनीजरुरत नही है, जितनी हिंदमें-मुल्कमारवाड-मेवाड-सिंध-पंजाब-राजपुताना-अवध-बंगाल-मध्यप्रदेश-वराड-खानदेश-महाराष्ट्र कर्णाकट-और-दखनतर्फ विहार करनेकीजरुरतहै, तीर्थंकरदेव त्या-

गीथे,–तोभी–मुल्क–ब–मुल्कफिरकर लोगोकों धर्मोपदेश देतेथे,–मुल्कगुजरात–काठियावाडतर्फ जहां श्रावकोंकी आबादी ज्यादाहै, उधर अहमदाबाद–पालिताना–पाटन–मेहसाणा–या–पालणपुरतक–जैनमुनिकों विहारकरना ज्यादामुश्किल नही, मगरतमाम हिंदुस्थानमें विहारकरना, और परिसहसहनकरना मुश्किलहै,–मुल्कोंमें फिरकर–जिज्ञासुलोगोकों धर्मोपदेशदेना इसके बराबरकोइ धार्मिकफायदा–नही, अगरकोइ इससवालकों पेशकरेकि–मुल्कगुजरात–काठियावाडमें विचरनेसे चारित्रधर्मका आराधन–ठीकहोताहै, जवाबमें मालुमहो,–ऐसाकोइ नियमनही, जहां अपनेआत्माकों धर्ममें पावंदरखनाचाहे–वहां–रखशकते है, हां ! परिसह सहनकरना जरुरपडेगा, योग–वहते वख्त–एकेलातपकरलिया–और योगवहनहोगया, ऐसासमजना गलतहै,–शाथमें–उसशास्त्रका पाठऔर अर्थभी सीखनाचाहिये,–व्याकरण–काव्य–कोश–न्याय–अलंकार–और धर्मशास्त्रपढकर–संस्कृत–प्राकृतजबानमें व्याख्यानदेना बडेफायदेकी बातहै,–अपनेधर्मानुयायीकों समजानासहजहै, मगरदुसरे धर्मवालोके शाथधर्मके–बारेमें बहेसकरना सहजनही, अब श्रावकधर्मकेबारेमें बयानसुनिये, ! श्रावककों मुनासिबहै,–सदाचारसेचले, व्यापारमेभी जुठ–न–बोले, विश्वासघात–न–करे, श्रद्धारहित सिर्फ ! केशरका तिलकलगानेसे श्रावक नहीबनसकते, श्रावकके (२१) गुणहासिल करनाचाहिये, और बारहव्रत इख्तियारकरनाचाहिये,–अपनीधर्मश्रद्धामें पावंदरहना, जीवहिंसासे बचावकरना, परस्त्रीगमन–नहीकरना,–अपनी दौलतका प्रमाणकरना,–और नियमकरनाकि–इतनीदौलतसे ज्यादा होजायतो धर्ममेंखर्चदुंगा,–अपनी सालियाना पैदाशमेसेआधा–चतुर्थांस या–दशांश–षोडशांश–धर्ममेंखर्चना, रात्रीभोजन नहीकरना, चौदह नियम हरहमेशधारण–करना, दरसाल एकजैनतीर्थकी जियारतकों

जाना, अपनी जींदगीतकमें नवलाखदफे नमस्कारमंत्रका पाठकरना, पनरांहकर्मादान नहीसेवना, जन्मसेलेकर गृहस्थधर्मके सोलहसंस्कार जैनविधिसे करना,-बाइसअभक्ष्य-और-बत्तीस-अनंतकायचीज नही खाना, अगरअपने गांवमें जिनमंदिरहो-तो-जिनप्रतिमाके दर्शनकों जाना,-सामायिक-प्रतिक्रमण करना, नवतत्व-दंडक-कर्मग्रंथ-क्षेत्र-समास-और नयचक्र-वगेराधर्मशास्त्रपढना,-थोडासा धर्मशास्त्रपढकर भाषाके ग्रंथवांचलिये-या-भाषणदेना सीखे, इससे सबजैनशास्त्रका ज्ञानहोगया अैसा समजना ठीकनही, धर्मखातेमे बोलेहुवे रुपयेपैसे तुर्त धर्मकाममें खर्चदेना चाहिये,-अपनी वहीखातेमें जमा कररखना अछानही,-न-मालुम कल-अपनीस्थिति कैसीहोजाय,-अपनेधर्मके देवमंदिरके-या-तीर्थकेदेवद्रव्यका हिसाब-अपनेहस्तगतहो-वो-देव-द्रव्य अपनेघरमे नहीरखना, जिनमंदिरके-या-उसतीर्थके भंडारमें रखना, और उसकीकुंचीयां-तीन-चार-या-पांचश्रावकोकेपास रख-ना, अपनेशहरमें स्वधर्मीश्रावक-कोइगुजरातीहो,-मारवाडीहो,-क-च्छीहो,-या-काठियावाडी वगेराहो,-देवद्रव्यरक्षण करनेमे सबका एकसमानहकहै,-मुनिम-गुमास्ते रखकर देवद्रव्यका कामचलाना-और दरसालका हिसाब-छपवाकरजाहिर करनाचाहिये,-जोजोश्रा-वक अैसानहीकरते है, मुताबिकफरमान जैनशास्त्रके-उनकी-भूलहै,-जोजो धर्मकाकामहै,-और-वो-जैनसंघसंबंधी है,-वो-चतुर्विधसंघकी सलाहसे करनाचाहिये,-इतना श्रावकका कर्तव्यलिखागयाहै,—

इतनालिखकर इसलेखकों खतमकरताहुं, और उमेदकरताहुं,-यह-चर्चापत्र-बांचनेवालोकों फायदेमंदहोगा, आपलोग इसकोंपढे, दुसरोकों पढनेकी हिदायतकरे, और सत्यका इख्तियार करे,—

ब-कलम-जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-
न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजी,-

☞ [निर्णय-चर्चापत्र.-]

(जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजी तर्फसे,)

१—कलमपहेली,-जैनशास्त्रोमें जैनमुनि-जैनसाधवी-श्रावक-और-श्राविकाकों जोजो धर्मक्रियाकरना तीर्थंकरगणधरोने फरमाया, उसकाबयान यहां दियाजाताहै,-चोथेआरेके मनुष्य बडेताकातवाले और आलादर्जेकी तकदीरवालेथे, इसलिये-वे-उत्सर्गमार्गपर ज्याद-हचलतेथे,-पांचवेआरेके मनुष्य कमताकातवाले रहगये, इसलिये अपवादमार्ग-यानी-शिथिलमार्गपर ज्यादहचलते है, उत्सर्गमार्गका नाम कठिनमार्ग-कहदो, और अपवादमार्गका नाम शिथिलमार्ग कहदो, दोनोके पर्यायनामहै,-जैनके पंचमहाव्रतधारी उत्कृष्टक्रिया-वान्-जैनसाधु-या--साध्वीकों--विहारमें-यानी--रास्तेमें किसीकी सहायता नहीलेनाचाहिये, असहायक होकर विहारकरना कहा, और जोकुछ तकलीफआनपडे सहनकरना,-मगर-नाराजनहीहोना,—

अगरकोइजैनमुनि-समेतशिखरजीवगेरा-जैनतीर्थोकी जियारत जातेवख्त-या-बनारसजैनपाठशालामें विद्यापढनेकेलिये-जातेसमय-या-मुल्कमारवाड-मेवाड-सिंध-पंजाब-राजपुताना--बंगाल--मध्य-प्रदेश-वराड-खानदेश-या-दखनहैदराबाद तर्फ-विहारकरतेवख्त-श्रावकश्राविका-या--नोकरचाकर शाथचले, उनश्रावकश्राविका-और-नोकरचाकरोकेलिये बेलगाडीभी शाथरहे, जैनमुनि-जानतेहो-वेकि-ये-सबलोग हमारेविहारकेसबब शाथचले है,-और सहायता लेवे,-तो-यहबात मुताबिकजैनशास्त्रके ठीकसमजना-या-कैसे, ? इसपर अगरकोइकहेकि-जमाना पहलेजैसा नहीरहा, शरीरकी ताकात कमहोगइ,-इसलिये जमानेहालमें-जैनमुनिकों इरादेधर्मके-या-तीर्थ-

यात्राके औसीसहायता लेनीपडती है, और औसीसहायतालेना-कोइ हर्जनही, तो-इसीतरह इरादेधर्मोपदेशके-कोइजैनमुनि-रैलमेंबेठनेकी सहायतालेवे-तो-क्याहर्ज है-? किसीने एकतरहकी सहायतालिइ-किसीनेदुसरीतरहकी सहायतालिइ,-मगर सहायतालेना जरुरपडता है,-धर्मशास्त्रमें औसा कोइकानुन नहीकि-जिसकीपाबंदी हरहालतमें-लाजमीहो,-यानी-कारणपडनेपरभी छुट-न-दिइहो, अगरकहाजाय पैदलविहारमें जैनमुनिकेलिये-जो-सहायता--श्रावकवगेराकी लिइ जाती है,-वो-इरादेधर्मके लिइजाती है, इसलिये भावहिंसा नही,-औरविना भावहिंसाके पापनही,-तो-यहबात दुसरीतरहकी सहायतामें-भी-समजलो, अगर उत्सर्गमार्गपर चलेतो-जैनमुनिकों किसीकी मददलेना, नहीचाहिये, अपवादमार्गमें लेसकते है—

२—कलमदुसरी,-जैनमुनिकों ऊत्सर्गमार्गमें नवकल्पीविहार-करनाकहा, अगरकोइ जैनमुनि-या-जैनसाधवी-विद्यापढनेकेलिये-किसीगांव-नगरमे-या-बनारसजैनपाठशालावगेरामें दोदो-चारचार वर्षतक ठहरे-तो-बतलाइये ! यहबात मुताबिकजैनशास्त्रके ठीकसम-जना-या-कैसे ? इसपर कोइ-जवाबदेवेकि-इरादे विद्यापढनके औसा कियाजायतोकोइ हर्जनही, तो सोचो ! विद्यापढनेकेलिये विहारमें अपवादमार्गका यानी शिथिलमार्गका सहारालेना पडा-या-नही ? फरमानतीर्थंकर-गणधरोकादेखो-तो-विद्याभीपढतेरहना और नव-कल्पी-विहारभी करते रहनाचाहिये,-जो-जो-जैनमुनि-या-जैन-साधवी-औसाबरतावकरतेहे,-वे-उत्सर्गमार्गपरचलनेवाले कहेजायगें, जो-औसाबरताव नहीकरसकते, उनकों मंजुरकरनाचाहिये, इरादे विद्यापढनेके विहारमें शिथिलमार्गका सहारालेनापडताहै,-अगरकहा जाय विद्यापढेगेतो-आगे धर्मोपदेशका फायदा होगा; तो-इसीतरह रैलविहारसेभी-आगे धर्मोपदेशका फायदाहोगा,—

३—कलम-तीसरी,-जैनशास्त्रोंमेंलिखाहै,-जैनमुनिको-उत्सर्गमार्गमें-उद्यान-बनखंड-बागबगिचे-या—पहाडोकी गुफामें रहना चाहिये,-इसपरकोइ-ऐसाकहेकि-आजकलके मनुष्योकी ऐसीताकात नहीरही, इसलिये इरादे संयम और देहरक्षाके गांवनगरमेंरहनेका शिथिलमार्ग इख्तियारकरनापडा,-तो-फिर सबुतहुवा,-इरादेसंयम और देहरक्षाके अपवादमार्गका सहारा लेनापडा,—

४-कलम-चौथी,-जैनशास्त्र उत्तराध्ययनमें लिखाहै,-जैनमुनिकों और जैनसाधवीकों दिवसके तीसरेप्रहरमें गौचरीजानाचाहिये,-पहले प्रहरमें ध्यानकरे, दुसरेप्रहरमें स्वाध्याय-और-तीसरेप्रहरमें भिक्षाकों जावे, अगरकोइ इसदलिलकों पेंशकरेकि-आजकल तीसरेप्रहरगौचरीकों जायगें-तो-भिक्षामिलना दुसवारहोगा, इसलिये इरादेदहरक्षाके दिवसके पहलेप्रहरमें चाह-दुधकी गवेषणा करनापडती है,-और दिवसकेदश-ग्यारहबजे गौचरीकों जानापडताहै,-सबुतहुवा,-इरादे-देहरक्षाके ऐसाबरतावकरना पडताहै,--जो-जो--जैनमुनि--उत्कृष्ट क्रियावान् बननाचाहै-दिवसके तिसरेप्रहरगौचरी-जावे, और-जोकुछ निरस-आहारमिले, उसपर संतोषकरे,—

५—कलम-पांचमी,-जैनशास्त्र-उत्तराध्ययनमें लिखाहै-जैनमुनि और-जैनसाधवी-क्षुधा-तृषावगेरा बाइसपरिसहकों सहनकरे,-खानपानकीचीज-न-मिलेतो-उसपरिसहकों सहन-करे, और अपनेअंतरायकर्मका उदयसमजे,रास्तेचलतेवख्त धूपठंड और कंकरपथरकी तकलीफपडेतो सहनकरे, अगरकोइ इसदलिलकों पेंशकरेकि-विहारके वख्त कंकर-पथर-या-धूपठंडकी तकलीफ सहन-न-होसके-तो-इरादे देहरक्षाके-कंतानके सफेद-मौजे पहनेतो क्याहर्ज है-? पांचमेआरेके मनुष्य-चतुर्थआरकके मनुष्योकी बराबरी नहीकरसकते, इसलिये

इसकालमें शरीररक्षाकरना पडती है-तो-सबुतहुवा, इरादे देहरक्षाके ऐसाबरताव करनापडा,—

६—कलम-छटी,-जैनशास्त्रोमें जैनमुनिकों दिनमें एकहीदफे आहारखानाकहा, ओर दिनमे नींदलेना नहीकहा, इसपर अगरकहा जायकि-शरीरकीस्थिति पहलेजैसी नहीरही, इसलिये दिनमें दोदफे आहारखाना पडताहै, औरदिनमें नींदभी लेनापडती है,-तो-फिर सबुतहुवा इरादे शरीरस्थितिके ऐसाकियाजाताहै,-असलमें पंचमहाव्रतधारी-उत्कृष्टक्रियापालनेकी चाहानावाले जैनमुनिकों दिनमें एकही दफे-आहारखाना चाहिये, औरदिनमें नींदलेना नहीचाहिये,—

७—कलम-सातमी,-जैनशास्त्रोंमें लिखाहै,-चाहे-कोइ-जैनसाधुहो-साधवीहो-श्रावकहो-या-श्राविकाहो, जबजब-उपवासव्रतकरे तो-पहलेरोज-एकासनाकरे, और पारनेकेरोजभी एकाशनाकरे, इसी तरह-बेलेका तपकियाहो-छह-टंकखानाछोडे, औरतेलेका तपकियाहो तोआठ-टंक-आहारखानाछोडे, आजकल इसतरहका बरताव-बहुत थोडे शख्शकरतेहोगे,-जोकोइ ऐसातप करे-वे-उत्कृष्टक्रियावान् और उत्सर्गमार्गपर चलनेवाले कहेजायगें, ऐसाकरे नही और अपने आपको उत्कृष्टक्रियावान् बोले-तो-इसबातकों जैनशास्त्र मंजुर नहीकरते,—

८—कलम-आठमी-जैनशास्त्रोमे लिखाहै-जैनमुनिको लकडेके पात्ररखनाचाहिये, धातुके रखनामनाहै, इसीतरह चश्मेभी काष्ठकेफ्रेमवाले रखनाचाहिये, अगरकहाजाय लकडेके फ्रेमबनतेनही, जबाबमे मालुमहो-कचकडेके फ्रेमबनेहुवे मीलते है, अगरकोइ इसदलिलको पेशकरेकि-इरादे पुस्तकपढनेके सोनेचांदीके फ्रेमवाले चश्मे पहननापडताहै, क्योंकि-पुस्तकपढनेमे चश्मेसे मददमिलेगी, फिरइरादे

पुस्तकपढनेके सोनेचांदीके फ्रेमवाले चश्मेपहेननाभी फायदेमंदहुवा, और बातबातमें इरादा लानापडा,

९—कलम-नवमी, जैनमुनिकों मुनासिबहै-आहार-विहारमें जोचीजमीले गृहस्थकों विनातकलीफपहुचायेलेवे, अगरकोइ जैनमुनि-श्रावककों ऐसालिखेकि-हम-यहांसे तुमारेगांवतर्फ आनाचाहते है, तुमारागांव यहांसे (१००) या-(५०) कोशदुरहै-हमारे आनेका प्रबंधकरदो, ऐसालिखनेसे श्रावकलोग उनकेसामने आदमी-या-नोकरचाकर भेजे-उननोकरचाकरोंकेलिये बेलगाडीवगेरा शाथचले मुताबिकजैनशास्त्रके जैनमुनिको ऐसालिखना योग्यनही, इससे-श्रावककों तकलीफ होगी,—

१०—कलमदशमी-अगरकोइ जैनमुनि-श्रावकोंकों ऐसाकहेकि हमको पचास-या-सो-रुपये-महावारीका--कोइपंडित बुलवादो-श्रावकोकी इतनीताकात खर्चकरनेकी-न-हो-जैनशास्त्र फरमातेहै उनपरऐसी फर्जडालना ठीकनही, अगरकोइकहे-यह-ज्ञानका कामहै श्रावकोंकों-न-कहेंगेतोकाम कैसेचलेगा ? जवावमें मालुमहो-श्रावकोंकों तकलीफ पहुचाकर कोइकाम-करनामुनासिबनही,-दशवैकालिक सूत्रमेलिखाहै-जैसे फुलकों विनातकलीफ पहुचाये भ्रमरअपना रसलेताहै-इसतरह जैनमुनि गृहस्थसे आहारलेवे, हां ! अगरकोइ श्रावक अर्जकरेकि-मैं-आपको ज्ञानकासाधन मिलादेनाचाहताहुं-तो जैनमुनि-उसकी योग्यता देखकर खर्चका-काम-बतलावे, ज्यादह न-बतलावे,—

११—कलमग्यारहमी-कोइजैनमुनि-अवलतो श्रावककों किसी धार्मिककामकी सूचनादेवे, श्रावक उससूचनापर अमलकरे, औरफिर

जैनमुनि-उसश्रावकको-कहे-यह-चीजहमकों कल्पेनहीं, इन्साफपुछताहै फिर उसकामकी सूचनादेनाकैसे कल्पता-था,—

१२—कलमबारहमी-अगरकोइ जैनमुनि-आचार्य--उपाध्याय गणी-प्रवर्त्तक वगेरापदवीके धारकबने-तो-पहले उनको यह सोच लेनाचहियेकि-मेने-उसपदवीके गुणहासिलकिये है-या-नही ? अकेलीतपस्याकरके योगवहन करलिया-और-ज्ञानहासिल कियानही. तो-अैसीपदवीसे क्याफायदा ? ज्ञान-सर्वआराधककहा,-और-क्रिया देशआराधककही. मगर-वोभी-श्रद्धासहितहो-तो,—

१३—कलम-तेरहमी-अगरकोइ--जैनयतिजीहो--तो--उनकोंभी-प्राणातिपात-मृषावाद-अदत्तादान-मैथुन--और--परिग्रह--ये-पांचमहाव्रतपालन-करनाचाहिये,-और दशविधयतिधर्म--आराधन करनाचाहिये,-जैनशास्त्रोमे पाठहै-जो-शख्श-पांचइंद्रियोको जीते उसकानाम-यतिहै,-जैनके-यतिनामधरानेवालोकों तीर्थंकरगणधराके दरबारसे छुट नहीमिली हैकि-तुम-खिलाफजैनशास्त्रके बरतावकरो, यतिजनोमेभी-जो-जैनाचार्यकी पदवीकेधारकहो-उनकों आचार्यपदके (३६) गुण हासिलकरना चाहिये, कचापानी नहीपीना-हरीवनास्पति नहीखाना, नवकल्पी विहारकरना, शुभह-शाम-दोनोवख्त प्रतिक्रमणकरना, और रजोहरण-मुखवस्त्रिका हमेशां पासरखना-तबजैनाचार्य-होसकते है,—

१४—कलम-चौदहमी--जैनशास्त्रोमे लिखाहै--हरेकश्रावक-श्राविकाकों श्रावकधर्मके (२१) गुण-और (१२) व्रत-हासिलकरना चाहिये, विनाश्रद्धाके-केशरका तिलक लगायाजाय-या-सामायिक-प्रतिक्रमण-कियाजाय-तो-इससे भावश्रावक नहीकहेजासकते,—

(दोहा.)

चौदहचुके-बारां भुले-छकायाके-न-जानेनाम,
नगर डंढेरा फेरिया-श्रावक महारा नाम. १,
श्रावकको कुलपायके-लियो-न-प्रभुको नाम,
जैसे कुवा-जलविना-हुवातो-कौनही काम. २,

श्रद्धापूर्वक-व्रतनियम जिसमेंहो-उनकों श्रावक कहना चाहिये,

[दोहा,-]

जीवदया गुणवेलडी-रोपी रिषभ जिनंद,
श्रावककुल मंडपचढी-सींची भरत नरींद, १,
सहस्र डुबकी में लही-मोती न आयो हाथ,
सागरको क्या दोषहै-हीन हमारे भाग, २,
पाप छिपाये ना छिपे-छिपेतो मोटे भाग्य,
दाबीदुबी ना रहे-रुइ लपेटी आग, ३,
जातमात्र जल वाहिया-कर्णकंस निज माय,
फुन-ते-शुभकर्मोदये-हुवा बडेरा राय,- ४,

☞ब-कलम-जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजी,-

☞[दोहा,-]

पानी बाढ्यो नावमें-घरमे वाढ्यो दाम,
दोनों हाथ उलेचिये-यही सयानो काम, १,

जो जामे निशदिनवसे-सो तामे परवीन,
गज सरितामे वहेचले-उलट चलतहैमीन, २,

समकीतवंता प्राणिया-करेकुटुंब परिपाल,
अंतर्घट न्यारा रहे-धाव खिलावे बाल. ३.

जिनवानीके ज्ञानसे-सुजत लोकालोक,
या वानी मस्तक धरो-सदा देंतहै ढौक. ४.

मखी बेठी सहतपें-पंख लिये लिपटाय,
हाथ मले और सीरधुने-लालचबुरी बलाय, ७.

नशा न नरको चाहिये-द्रव्य बुद्धि हरलेत,
एक नशेके कारणें-सब जन ताली देत, ८.

सीर मुंडाये तीन गुण-सीरकी मिटगइखाज,
खानेको रोटी मीले-लोक कहे महाराज. ९.

को-सुख-को-दुखदेत है-देतकर्म झकझोर,
उरझत-सुरझत आपही-धजा पवनके जोर. १०.

अरे ! बिनोले बाबरे-मनके बडे जोधीर,
आपउघाडे होरहे-परको ढकत शरीर. ११.

जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजीके बनायेहुवे ग्रंथोकीयादी,-

१-किताब-मानवधर्मसंहिता,.... ....सिलक

२-किताब-जैनसंस्कार विधि, ...सिलक

३-किताब-रिसाला मजहब ढुंढिये, ...सिलक

४-किताब-त्रिस्तुतिपरामर्श,.... .... } सिलक

५-किताब-बयान पारसनाथपहाड........ }

६-किताब-जैनतीर्थगाइड-शेठ हवसीलालजी-पानाचंद साकीन बालापुर-जिला-आकोला-मुल्क वराडने छ इहै, किंमत तीनरुपये, जिनको चाहिये उनसे मंगवाले

७-किताब सनमपरस्तिये जैन,-इसमे मूर्त्तिपूजाका ब था,-चर्चाका ग्रंथहोनेसे मुफ्त बांटदिया, अब लकमे नहीं.-

८-न्यायरत्नदर्पण-यहभी चर्चाकाग्रंथथा-मुफ्त बांटदि थोडी नकल सिलकमें है, जिसको चाहिये मंगवालेवे

९-हिदायत बुतपरस्तिये जैन,-इसमें मूर्त्तिपूजाका बया सिलकमें मौजूदहै, जिनको चाहिये मंगवालेवे,-मुफ्त दियाजाताहै,-

१-खरतरगछ मीमांसा-२-प्राचीनश्वेतांवर ३-पंचमकालपताका, और, ४-जहुरेआलम, येग्रंथ अबतक छपेनहीं।-अगरकोई जैनश्वेतांबर-श्रावक अपनेखर्चसें इनग्रंथोंको छपवानेचाहे ग्रंथकर्त्तासेपुछे,-

ॐ अर्हम् नमः।
श्री ... मंदिर